आतंकवाद एवं विस्फोट के बाद के अन्वेषण पर पाठ्य सामग्री

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो

नई दिल्ली

केन्द्रीय गुप्तचर प्रशिक्षण स्कूल

चण्डीगढ़

विषय	पृष्ठ संख्या
आतंकवाद – एक दृष्टि	1
आतंकवादी कार्यवाहियों की विशिष्टताएं	27
विस्फोटक तथा उनका प्रभाव	46
तात्कालिक विस्फोटक यंत्र (आई0 ई0 डी0)	64
बम्ब घटनास्थल की जांच प्रक्रिया	76
बम्ब घटना के बारे में प्रारंभिक प्रतिक्रिया	90
बम्ब घटनास्थल प्रतिक्रिया की प्रक्रिया का अनुलग्नक	98
अपराघ घटना का प्रलेखन	101
अनुवर्ती जांच एवं संदिग्ध व्यक्ति की पहचान	115

आतंकवाद – एक दृष्टि

समस्त विश्व में विभिन्न देशों की सरकारों को आतंकवादी संगठनों से उत्पन्न खतरों से संबंधित मूल तथा परिचयात्मक सामग्री इस भाग में शामिल है। आतंकवाद की परिभाषा, आतंकवाद की उत्पत्ति का संक्षिप्त इतिहास, आतंकवादियों को प्रेरित करने वाले तत्वों पर चर्चा, उनके उद्देश्य, रणनीतियाँ और संगठनात्मक ढांचों की किस्मों इत्यादि को भी इस भाग में शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त आतंकवाद पर अमेरिकी नीति की भी समीक्षा की गई है।

उद्देश्य :

इस भाग के अध्ययन के बाद आप निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगे :-

- आतंकवाद के विकास पर चर्चा !
- यह परिभाषित करना कि आतंकवाद में क्या-क्या आता है ।
- आतंकवाद के गति विज्ञान (डॉयनामिक्स), प्रेरक तत्व (मॉटीवेशन), उद्देश्य, रणनीतियाँ, आतंकवादी ग्रुपों की ताकत और कमजोरियों को बताना।
- आतंकवादियों के संगठनात्मक ढांचों की जानकारी देना।
- आतंकवाद पर अमेरिकी नीति की व्याख्या करना।

प्राचीन काल से ही आतंकवाद कमजोर लोगों की एक रणनीति रहा है। मानवीय सभ्यता के आरंभ से ही हत्या करना, अपहरण और बंधक बनाना इत्यादि के रूप में आतंकवाद का प्रयोग अलग अलग तरह से किया जाता रहा है।

ऐतिहासिक परिपेक्ष्यः

आतंकवाद के वर्तमान रूप को जानने के लिए इसके विकास को जानना भी जरूरी है। आतंकवाद और राजनैतिक हिंसा की शुरूआत वस्तुतः इतिहास के आरंभ से ही देखी जा सकती है। ईसा मसीह के जन्म से पूर्व के

समय में भी दमनकारी शासकों की हत्या को न केवल माफ किया जाता था बल्कि इसका गुणगान, प्रशंसा और सम्मान भी किया जाता था।

11वीं शताब्दी में परशिया और अस्सीरीया के हत्यारों ने संपूर्ण इस्लामिक साम्राज्य में भय और आतंक का वातावरण फैला रखा था।

18वी शताब्दी में फ्रॉसीसी क्रांति के दौरान रॉबसपीयरे ने फ्रॉसीसी कुलीनतंत्र को नष्ट करने के लिए अंतंकवाद का सहारा लिया और लगभग 40,000 लोगों को मौंत के घाट उतार दिया। इनमें से अधिकतर लोगो को सार्वजनिक तौर पर गिलोटिन किया गया। अमेरिकी क्रान्ति के दौरान अंग्रज़ों और उनके उपनिवेशवादी समर्थको के खिलाफ आतंकवाद का प्रयोग किया गया।

अमेरिकी सिविल-वार के दौरान भी संगठित आतंकवादी ग्रुपों का व्यापक तौर पर प्रयोग किया गया और एक रणनीति के तौर पर उस समय इसकी स्वीकृति भी थी। दोनों पक्षों ने ही पूर्व सैनिकों और डाकुओं के ग्रुपों द्वारा आतंकवादी कार्रवाइयों की रणनीति को अपनाया।

समकालीन आतंकवाद (Contemporary terrorism)

वर्तमान आतंकवाद की शुरूआत 19वीं शताब्दी और 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल, विशेष तौर पर ज़ार रूस के समय से मानी जाती है।

1860 के दशक में रूसी लेखकों, मिखाइल बाकुनिन, सर्गेई निचायेव, मोरोज़ोव और जॉर्जी तामोवस्की की रचनाएँ यूरोप पहुंची। 1869 में प्रकाशित सर्गेई निचायेव की रचना 'कैटिकिज़्म ऑफ ए रेवॅल्यूशनिस्ट' में आतंकवाद के प्रयोग की नींव रखी गई है। विश्व की लगभग सभी भाषाओं में अब तक इस पुस्तक का अनुवाद हो चुका है। इस पुस्तक ने विश्व में कई आतंकवादी आंदोलनों की आधारभूति तैयार की है।

20वीं शताब्दी के शुरू में सर्गेई निचायेव की पुस्तक 'कैटिकिज़्म ऑफ ए रेवॅल्यूशनिस्ट', बाकुनिन की पुस्तक 'कॉनसैप्ट ऑफ मॉस टैक्टिक्स' और लेनिन की क्रांतिकारी आतंकवादियों की व्यावहारिक रणनीतियाँ के मिश्रित प्रभाव ने रूस में बोलशेविक्स को सत्ता तक पहुंचाने में मदद की।

शताब्दी के पहले आधे भाग में यानि 1950 तक सक्रिय अधिकतर आतंकवादी ग्रुप इस बात से प्रेरित थे कि उन्हें आतंकवाद के माध्यम से उपनिवेशवाद के बंधनों से मुक्ति मिलेगी। उनके आतंकवाद को 'राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम'

की भी संज्ञा दी गई। सन् 1945 से आतंकवाद, नए उभरते देशों में विद्रोह और लोकतांत्रिक समाज के खिलाफ छद्म युद्ध लड़ने का महत्वपूर्ण तरीका बन गया।

1950 और 1970 के बीच व्याप्त असंतोष की भावना में भी समकालीन आतंकवाद की जड़े खोजी जा सकती है। इस समय के दौरान राजनैतिक ब्यानबाजी और सामाजिक जनचेतना के लिए हिंसा करना एक मशहूर रणनीति बन गई। शताब्दी के अंतिम भाग में आतंकवाद राष्ट्रीय सीमाओं को भी पार कर गया और दूसरे देश से अपने देश के खिलाफ राजनैतिक लड़ाई लड़ने का एक मुख्य तौर-तरीका बन गया। इस दौरान राजनैतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने, अपने उपर बिना कोई आरोप लिए विरोधियों पर आक्रमण करने अथवा विदेश नीति के सस्ते और प्रभावी अस्त्र या औजार के तौर पर भी आतंकवाद का प्रयोग किया जाने लगा।

पिछले दशक में, आतंकवाद परंपरागत परिभाषाओं से आगे निकल गया है अर्थात इस दौरान इसकी परिभाषा बदल गई है। अपने धार्मिक और राजनैतिक प्रतिद्वंदियों को समाप्त करने के लिए आतंकवाद अति-कट्टरपंथी ग्रुपों का पसन्दीदा तरीका बन गया है। मध्य-पूर्व की शांति प्रक्रिया का विरोध करने वाले ग्रुप, शान्ति प्रक्रिया को अस्थिर करने के लिए निरंतर आतंकवादी रणनीति का इस्तेमाल कर रहे हैं। नशीली दवाओं के अन्तरराष्ट्रीय अवैध व्यापारी अपने धन्धे का विरोध करने वाली सरकारों को भयभीत करने और अपने संगठन के भीतर निष्ठा बनाए रखने के लिए आतंकवादी चालबाजी का प्रयोग कर रहे हैं। संसार के कुछ हिस्सों में, संगठित अपराधियों द्वारा जारी आतंकवादी कार्रवाईयाँ भी वैध सरकारों के सामने उतना ही खतरा पैदा कर रही है जितना कि आतंकवाद की परंपरागत किस्में।

आतंकवाद को परिभाषित करना

आतंकवाद की परिभाषा के बारे में आम राय बनाने के लिए अभी भी बहुत सी असहमति है। आतंकवाद की परिभाषा की समस्या उस समय फिर उठाई जाती है जब किसी व्यक्ति को समाज के एक भाग द्वारा आतंकवादी बताया जाता है और समाज के दूसरे भाग द्वारा उसे स्वतंत्रता संग्रामी कह कर उसका आदर व सम्मान किया जाता है। अतः इसमें हैरानी वाली कोई बात नहीं है कि आतंकवाद को परिभाषित करने में कुछ समस्याएँ हैं।

हमें आतंकवाद को परिभाषित करने के लिए इतना चिन्तित होने की क्या जरूरत है?

इसका उत्तर बहुत आसान है, किसी देश की आपराधिक न्याय प्रणाली के अनुसार जो व्यवहार या वर्ताव गैर कानूनी समझा जाता है और कानूनी तौर पर अस्वीकार्य है, उसे परिभाषित करना बहुत आवश्यक है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी आतंकवाद की एक परिभाषा पर सहमत होना बहुत जरूरी है ताकि राष्ट्र द्विपक्षीय और बहुपक्षीय लक्ष्यों

का समर्थन करने वाली ठोस अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी नीतियों को विकसित कर सकें और उन्हें लागू कर सके। अन्तरराष्ट्रीय दृष्टि से आतंकवाद को परिभाषित करने पर स्वीकार्य युद्धरत कार्य और आपराधिक गतिविधियों में अंतर करने के लिए एक आधार निश्चित होगा। इससे राजनैतिक अपराध और सामान्य अपराध के बीच अस्पष्टता को भी दूर करने में मदद मिलेगी।

इन दोनों के बारे में स्पष्ट जानकारी होने से आतंकवादी रोधी कार्रवाईयों के ऐसे कार्यक्रम तैयार करने में मदद मिलेगी जो आतंकवाद रोकने के नाम पर वैध/कानूनी राजनैतिक प्रतिद्वंदियों के लिए दमनकारी न समझे जाएं।

यद्यपि बहुत से लोग इसे परिभाषित करने की समस्या के छोटे-छोटे बिन्दुओं पर भी तर्क-वितर्क करेंगे लेकिन इस बात पर सभी सहमत होंगे कि आतंकवादी कार्रवाईयों को करने वाले आतंकवादी, अपराधी ही होते हैं। आतंकवाद की परिभाषा का केवल एक सामान्य तत्व यही दिखाई देता है कि आतंकवाद के शिकार/पीड़ित या तो मारे जाते हैं, घायल हो जाते हैं या उन्हें ऐसा होने का खतरा रहता है और ऐसा करना विश्व के अधिकतर भाग में गैर कानूनी है।

एक शब्दकोश में दी गई परिभाषा के अनुसार 'लोगों को अपने वश में करने अथवा किसी लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हिंसा और डराने-धमकाने का प्रयोग करना' आतंकवाद है। इस परिभाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ऐसी कोई भी कार्रवाई जो कि एक निश्चित वर्ग में आतंक पैदा करती है, वह आतंकवाद है।

आतंकवाद और अन्य किस्मों के हिंसक व्यवहार में अंतर करने के लिए शब्दकोशों की परिभाषाएँ ज्यादा लाभप्रद नहीं है। अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सामान्य अपराधी हिंसा और डराने-धमकाने का प्रयोग करते हैं। आपराधिक उद्देश्यों के लिए हमला, सशस्त्र डकैती और हत्या हत्यादि का प्रयोग किया जाता है, लेकिन कभी कभार होने वाले अपराध आतंकवाद नहीं है, जैसा कि आज विश्व में सामान्यतः कहा जाता है। इसी तरह कुछ सरकारें भी लोगों-विशेषकर अपने नागरिकों को नियंत्रण में रखने के लिए डराने-धमकाने और हिंसा का प्रयोग करती हैं।

हालांकि बहुत से लागों के लिए ये कृत्य निंदनीय हैं, लेकिन कुछ लोगों का यह तर्क है कि अपनी ही सरकारों द्वारा नागरिकों को वश में करने के लिए ऐसे हथकंडों का प्रयोग करना अपने आप में आतंकवाद है। दूसरे शब्दों में, यद्यपि सरकारें अपने नागरिकों के खिलाफ आतंकवाद का प्रयोग कर सकती हैं, लेकिन अपने नागरिकों के खिलाफ सरकारों की सभी हिंसक कार्रवाईयाँ आतंकवादी कार्रवाईयाँ नहीं हैं।

कुछ विशेषज्ञ आतंकवाद को एक युद्ध या संग्राम की तरह देखते हैं। दूसरे कुछ लोगों का विश्वास है कि आतंकवाद को आपराधिक गतिविधियों की बजाए युद्ध की एक किस्म कहना आतंकवादियों को वैध ठहराना है और इससे उनकी कार्रवाईयाँ 'स्वीकार्य अंतरराष्ट्रीय व्यवहार' के दायरे में आ जाती हैं।

अमेरिका में काफी वर्षों तक इस बात पर विवाद रहा है कि आतंकवाद की सर्वमान्य परिभाषा क्या होनी चाहिए। प्रत्येक विभाग, एजेन्सी और प्रशासन की अपनी ही एक परिभाषा थी। परिभाषा की इस समस्या ने आपराधिक अभियोजन और क्षेत्राधिकार को जटिल बना दिया। परिणामस्वरूप, कानून लागू करने वालों के आतंकवादरोधी प्रयासों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। 1983 से अमेरिका सरकार ने आतंकवाद की जो परिभाषाएँ बनाई हैं उनमें निम्नलिखित तत्वों को शामिल किया गया है :-

- आतंकवाद का अर्थ है कि पहले से निश्चित, राजनीति से प्रेरित ऐसे हिंसात्मक अपराध जो सब-नेशनल अथवा गुप्त एजेन्टों द्वारा सामान्य नागरिकों को लक्ष्य बनाकर किए जाते हैं। ऐसे अपराध अक्सर किसी वर्ग विशेष को प्रभावित करने के लिए किए जाते हैं। (विशेषकर कानूनी तौर पर कार्य कर रही सरकारों को प्रभावित करने के लिए)
- अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का अर्थ है कि ऐसा आतंकवाद जिसमें एक से ज्यादा राष्ट्रों के नागरिक अथवा क्षेत्र शामिल होते हैं।
- आतंकवादी ग्रुप का अभिप्रायः है कि ऐसा कोई भी ग्रुप जो या तो स्वयं आतंकवादी कार्रवाईयाँ करता हैं अथवा उसके ऐसे महत्वपूर्ण सब-ग्रुप हैं जो आतंकी कार्रवाईयाँ करते हैं।

संक्षेप में ऐसी किसी भी कार्रवाई को आतंकवाद परिभाषित किया जा सकता है जिसमें निम्नलिखित मानदण्ड शामिल हों :-

- कृत्य गैर कानूनी है।
- इसमें हिंसा अथवा ताकत का प्रयोग किया जाता है या ऐसा करने की धमकी दी जाती है।
- हिंसा या ताकत का प्रयोग व्यक्तियों अथवा संपत्ति को लक्ष्य बनाकर किया जाता है।
- इसकी रचना एक सरकार या समाज को डराने के लिए की गई हो।
- यह राजनैतिक, वैचारिक अथवा धार्मिक उद्देश्यों के समर्थन में हो।

आतंकवाद का गतिविज्ञान (डाइनेमिक्स)

आतंकवाद कुछ कारणों, जैसे लोगों को प्रभावित करने, अपना अस्तित्व बनाए रखने, नास्तिक अथवा अपने धर्म में विश्वास न करने वालों को दंडित करने की इच्छा इत्यादि के कारण विकसित होता है। आतंकवादी जब दबाव में होते हैं तो एकजुट होने का प्रयत्न करते हैं और जब खाली होते हैं तो कमज़ोर पड़ते जाते हैं। आंतरिक राजनीति और वैचारिक संघर्ष की परिस्थितियों में वे फलते-फूलते हैं। वे अपनी गति-विधियों की मात्रा बढ़ाते हैं और अपने अस्तित्व को स्थाई बनाते हैं। अपनी व्यवहार्यता को साबित करने के लिए वे यह कोशिश करते है कि उनके ऑप्रेशनस पहले के मुकाबले अधिक दर्शनीय और शानदार होने चाहिए। अक्सर आतंकवादी ग्रुपों की प्राथमिकताएँ धीरे-धीरे बदल जाती हैं और उनके उद्देश्यों की तुलना में उनके अपने निजि हित अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। अंत में आतंकवाद उनके अपने स्वार्थ का एक साधन बन जाता है।

आतंकवादी हिंसा में निम्नलिखित कारक शामिल हैं :-

- राजनैतिक - बदनाम, दमनकारी और भ्रष्ट सरकार
- सामाजिक - मध्यम श्रेणी की गैर-मौजूदगी अथवा अत्याधिक भेदभाव
- आर्थिक - बहुत अधिक गरीबी और बेरोजगारी
- वैचारिक - राजनैतिक विचारधारा का हिंसात्मक विरोध
- भू-राजनैतिक -अधिक विदेशी जनसंख्या और/ अथवा सीमा विवाद
- धार्मिक - धार्मिक संघर्ष अथवा धार्मिक हिंसा
- विदेशी प्रभाव -विद्रोही गतिविधियों को विदेशी समर्थन

आतंकवाद के प्रेरणा स्रोत (Motivations)

समकालीन आतंकवादी कभी-कभार ही अकेले कार्रवाई करते हैं। वे एक ऐसे ग्रुप से संबंधित होते हैं जिसके सदस्य एक समान विचारधारा से प्रेरणा पाते हैं। आतंकवादी स्वयं को चाहे अलगाववादी, अराजकतावादी, विनाशवादी, विद्रोही, राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, क्रांतिकारी या सच्ची धार्मिक आस्था वाले कहें, लेकिन उन्हें मूलभूत प्रेरणा किसी राजनैतिक, सामाजिक अथवा आर्थिक कारण से ही मिलती है। बहुत से मामलों में आतंकी संगठन, राजनैतिक संगठनों की सैनिक इकाई के तौर पर कार्य करते हैं और उनसे समर्थन पाते हैं। कुछ मामलों में आतंकवादी प्रभुसत्ता संपन्न सरकारों के समर्थन और उनके निर्देशों पर ही कार्य करते हैं। इस प्रकार वे अपनी विदेश नीति के एक गुप्त और सस्ते हथियार के तौर पर उनका उपयोग करते हैं।

आतंकवादी कार्रवाईयाँ कई उद्देश्यों से की जाती हैं। वास्तव में इनके लक्ष्य इन कार्रवाइयों के तत्काल शिकार हुए व्यक्ति न होकर एक विस्तृत वर्ग होता है। इस प्रकार यह एक राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास होती हैं। आधुनिक आतंकवादी समूहों में आतंकवाद के कई अंतर देखे जा सकते हैं। इस ग्रुपों के उद्देश्यों को जानने के लिए इन अंतरों को जानना भी जरूरी है। आतंकवादी ग्रुपों की भविष्य की कार्रवाईयों का अनुमान लगाने के लिए इनके प्रेरणा स्त्रोतों को समझना आवश्यक है। इनमें से कुछ अंतर इस प्रकार हैं -

- राष्ट्रीय और घरेलू आतंकवाद : मुख्यतः एक राष्ट्र के क्षेत्र, नागरिकों और हितों से संबंधित आतंकवाद।
- अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद : एक राष्ट्र से अधिक राष्ट्रों के क्षेत्रों, नागरिकों/हितों से संबंधित आतंकवाद।
- राज्य समर्थित और राज्य निर्देशित आतंकवाद : ऐसा आतंकवाद जिसे किसी प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य से सक्रिय अथवा मूक समर्थन प्राप्त होता है अथवा जिसे प्रभुसत्ता संपन्न राज्य द्वारा निर्देशित किया जाता है।

इस दशक के दौरान एक नया आतंकवादी खतरा उभरकर सामने आया है। समान विचारधारा वाले अति कट्टरपंथी अब इकट्ठे हो रहे हैं और आतंकवादी गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं। इसके लिए इनके वरिष्ठ नेतृत्व द्वारा कोई औपचारिक निर्देश नहीं दिए जाते हैं। यह विकेन्द्रीकृत होते हैं और कई खण्डों में विभक्त होते हैं। इस सिस्टम की स्वायत प्रकृति के कारण इसके अलग-अलग हिस्सों को एक स्तर तक संरक्षण प्राप्त होता है।

इनके अनुयायी किसी संगठित ग्रुप के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होते। इसके विपरीत ये राजनैतिक तौर पर ढीले-ढाले समूह होते हैं जिनकी विचारधारा एक अध्यात्मिक नेता से मेल खाती है। इन लोगों की समान विचारधारा होती है जैसे कि इजरायल विरोधी, पश्चिम विरोधी, अमेरिका विरोधी और ऐसी मध्यपूर्व सरकारों का कट्टर विरोध करना जो पश्चिम की नीतियों का समर्थन करती है। ये विभिन्न व्यक्तियों और असंबद्ध संगठनों तथा इसके प्रायोजक राष्ट्रों से समर्थन पाते हैं। समर्थन के किसी एक स्रोत को समाप्त करने से इन पर काई महत्वपूर्ण असर नहीं पड़ता है।

इन ग्रुपों को संघर्ष/लड़ाई का अच्छा अनुभव भी हो सकता है जिससे वे और भी अधिक खतरनाक हो सकते हैं। हो सकता है कि इनके बहुत से सदस्यों ने अफगनिस्तान या बोसनिया में कार्य किया हो। निम्नलिखित कारणों से इस नए खतरे ने आतंकवाद विरोधी प्रयासों के लिए एक नई चुनौती पेश की है :-

- ये ग्रुप विकेन्द्रीकृत हैं और कई हिस्सों में विभक्त हैं।

- सामान्यतः इन ग्रुपों का कोई एक केन्द्रीकृत नेता नहीं होता है।
- इन ग्रुपों के कोई निश्चित ठिकाने नहीं होते हैं।
- सदस्यों को संर्घष/लड़ाई का बहुत अनुभव होता है और इन्हें इधर से उधर जाने की पूरी आजादी होती है।
- इनके ऑप्रेशनों को योजना और लक्ष्यों को निर्धारित करने का कार्य व्यक्तिगत इकाईयों द्वारा किया जाता है।
- परंपरागत तौर पर आतंकवाद प्रयोजक राज्यों पर दबाव प्रभावकारी सिद्ध नहीं होता है क्योंकि उनका इन ग्रुपों पर बहुत ही कम नियंत्रण और प्रभाव होता है।

इनमें से प्रत्येक तत्व की प्रेरक विचारधाराओं के कई विविध और व्यापक आधार हो सकते हैं। इनके कुछ प्रेरक स्त्रोत इस प्रकार के भी हो सकते हैं :-

- सरकारों के कुछ कार्यों को रोकना अथवा समाप्त करना ।
- शक्तिशाली विरोधी/विपक्ष को हराना अथवा कमजोर बनाना ।
- सत्ता की सरकार को गिराने की इच्छा ।
- वर्तमान कानूनों को समाप्त करके नई सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने की इच्छा ।
- इसके अतिरिक्त अन्य किसी राजनैतिक, समाजिक, सांप्रदायिक या धार्मिक उद्देश्य को प्राप्त करने की इच्छा ।

आतंकवाद के उद्देश्यः

आतंकवाद की हर कार्रवाई किसी विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए होती है। सामान्यतः ऐसे उद्देश्य निम्नलिखित में से कोई एक या अधिक हो सकते हैं :-

- अपने उद्देश्यों के लिए अपनी विश्वव्यापी, राष्ट्रीय अथवा स्थानीय पहचान बनाना।
- सरकार को अति-प्रतिक्रिया के लिए उकसा कर आतंकवादियों के प्रति अधिक सहानुभूतिपूर्वक वातावरण तैयार करना।

- सरकारी सुरक्षा बलों को परेशान करना, कमजोर बनाना या अपमानित करके उनकी पकड़ को कमजोर करना और उन पर लोगों के विश्वास को समाप्त करना।
- पैसा, हथियार और औजार प्राप्त करने के लिए संपत्ति लूटना।
- सामरिक या प्रतीकात्मक ठिकानों को नष्ट करना।
- विदेशी निवेश या सहायता कार्यक्रमों को हतोत्साहित करना।
- सरकारी निर्णयों, कानूनों या चुनाव को प्रभावित करना।
- कैदियों को छुड़ाना।
- प्रतिशोध लेना।
- गुरिल्ला युद्ध का आकार देना।

वास्तव में आतंकवाद का असर इसकी कार्रवाई में नहीं होता है बल्कि इस बात में होता है कि लोगों या सरकार की इसके बारे में क्या प्रतिक्रिया होती है।

आंतकवादी रणनीतियाँ :

आतंकवादी रणनीतियों को केवल आतंकवादी नेताओं और आतंकवादियों की अपनी कल्पना तक ही परिसीमित नहीं किया जाता है। सारे संसार में आतंकवादियों के बीच सबसे सामान्य रणनीति है कि ऐसी आतंकवादी कार्रवाइयाँ करना या आतंकवादी कार्रवाइयों की धमकियाँ देना, जिससे मीडिया या लोगों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो और सरकार को वे प्रभावित या अस्थिर कर सकें तथा भय फैला सकें। अधिकतर मामलों में आतंकवाद का लक्ष्य इसमें शिकार हुए लोग नहीं होते हैं परन्तु वे तो आतंकवादियों के अल्प या दीर्घ लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए साधन मात्र (टूल) होते हैं। आतंकवादी कार्रवाइयों से हिंसा बढ़ती है और उनके निशाने भी बढ़ जाते हैं।

आतंकवादियों की रणनीति का महत्वपूर्ण पहलू है इसका प्रचार या प्रोपागेण्डा करना। मीडिया संचार में वृद्धि के कारण आतंकवादियों को अपने हिंसक कृत्यों को दुनिया में प्रचारित करने में मदद मिलती है। इसके कुछ उदाहरण मुनीच औलम्पिक जनसंहार, पोप की हत्या का प्रयास, तेहरान में अमेरिकी दूतावास पर कब्जा, लंदन में इरानी दूतावास की घेराबंदी, टी.डब्लयू.ए.-847 का अपहरण, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर बम गिराना इत्यादि। इन घटनाओं ने दुनिया के लोगों को प्रभावित किया है जिससे आतंकवादियों को अपने उद्देश्यों को दुनिया को दिखाने की इच्छा की पूर्ति हुई है। उनकी इस रणनीति के नतीजे चाहे जो भी हों लेकिन यदि उनके इन कृत्यों को व्यापक प्रचार मिलता है

तो वे अपने उद्देश्यों में सफल होते है।

आतंकवादी घटनाओं में तीन मुख्य कारक है आतंकवादी, सरकार और पीडित व्यक्ति, इनके अतिरिक्त दो अन्य कारक हैं मीडिया और जनसमुदाय, जो उनकी कार्रवाइयों को देखता है। आतंकवादी पीड़ित को धमकियाँ देते हैं। पीड़ित सरकार से सुरक्षा की माँग करता है। सरकार बदले में आतंकवादियों पर दबाव बनाती है। दुर्भाग्य से यह दबाव पीड़ितों की स्वतंत्रता को प्रभावित करता है। ऐसे सभी मामलों में संभावित खतरों और उनके लिए किए गए उपायों का संचार माध्यमो द्वारा विश्लेषण या जाँच परख की जाती है।

आतंकवाद का वास्तविक उद्देश्य है कि भय के व्यवस्थित प्रयोग से समाज के एक वर्ग को प्रभावित करना। अक्सर प्रैस इसके लिए महत्वपूर्ण रोल अदा करता है। इसके माध्यम से ही घटनाओं का प्रसारण होता है और अधिकतर हमें घटनाओं के बारे में मीडिया के ही दृष्टिकोण की जानकारी मिलती है। अक्सर प्रैस की वजह से ही आतंकवादी ग्रुप इतने बड़े और प्रभावी दिखाई देते हैं, जितने वे वास्तव नहीं होते हैं। इसके साथ-साथ यह भी दिखाया जाता है कि सरकार अयोग्य है और आतंकवादी खतरों से निपटने मे सक्षम नहीं है।

तकनीक के विकास के साथ-साथ आतंकवाद का स्वरूप भी विकसित हो गया है। आधुनिक संचार, परिवहन, उच्च घातक हथियार और अन्य तकनीकी विकास ने समकालीन आतंकवादियों की विनाशकारी शक्तियाँ बढ़ा दी हैं। आज आतंकवादियों के पास उपलब्ध हथियारों को पहले की अपेक्षा अधिक विनाशकारी समझा जाता है। इन नये विनाशकारी उपकरणों के प्रयोग की क्षमता भी बढ़ गई है।

आतंकवादियों की पहुंच जनसंहार के किसी भी परमाणु हथियार, रासायनिक हथियार या वायोलोज़िकल हथियार तक पूरी तरह से संभव है। एक परमाणु हथियार बनाने के लिए सामग्री कहाँ से और कैसे जुटाई जाए, इसकी जानकारी के प्रकाशन, निर्देशों सहित असानी से उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त जिन देशों को आतंकवाद का समर्थक माना जाता है वे परमाणु रिएक्टर बनाने की प्रक्रिया में हैं। इससे उन्हे परमाणु हथियारों के लिए आवश्यक विखंडीय सामग्री प्राप्त हो जाएगी।

बहुत वर्ष पहले तीन व्यक्तियों ने नर्व गैस के आवश्यक मिश्रण तैयार कर लिए और जब वे इन्हें बेचने का प्रचार कर रहे थे तो पकड़े गए।

कोई भी व्यक्ति टोक्यो उपमार्ग में हाल ही में हुए जापानी सरीन नर्व गैस आक्रमण की उपेक्षा नहीं कर सकता है। इसमें बारह लोग मारे गये और दो हजार जख्मी हुए। इस अकेले आक्रमण से उस बात की पुष्टि होती है

जिसे वर्षों से आतंकवादी कह रहे हैं कि एक प्रतिबद्ध आतंकवादी के लिए जनसंहार के हथियार बनाना या उनका उपयोग करना अपेक्षाकृत एक बहुत ही आसान कार्य है।

आतंकवादियों की शक्तियाँ :

आतंकवादी संगठनों की कुछ शक्तियाँ इस प्रकार हैं :-

- वे गुपचुप तरीके से छोटी कोशिकाओं की तरह कार्य करते हैं।
- वे सामान्यतः स्थानीय होते हैं।
- वे इधर-उधर काफी जाते रहते हैं।
- गुप्त सूचनाओं के बारे में ये अच्छे सक्षम होती है।
- सामान्यतः उनकी अच्छी आप्रेशनल सुरक्षा होती है।
- अपेक्षाकृत उनकी शिक्षा का अच्छा स्तर होता है।
- सामान्यतः उनमें सशक्त राजनीतिक प्रेरणा होती है।
- कुछ बड़े संगठनों के राजनैतिक संरक्षण ग्रुप होते हैं।
- वे समान्यतः लोकप्रिय मुद्दों को उछालते हैं।
- समर्थन पाने के लिए वे अक्सर आम लोगों से जुड़े मुद्दों का समर्थन करते हैं।
- हमले का लक्ष्य, स्थान और समय उनकी अपनी पसंद का होता है।
- कानून उनको किसी सीमा में नहीं बांध सकता है।
- उनका यह विश्वास होता है कि लक्ष्यों की प्राप्ति से ही माध्यम का औचित्य सिद्ध हो जाता है।
- असंतुष्ट लोगों मे से भर्ती करने का उन्हें लाभ होता है।
- अक्सर उन्हें अंतरराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त होता है।
- वे घरेलू कानूनों का फायदा उठाते हैं।
- कभी-कभार वे तीसरे देश से कूटनीतिक समर्थन प्राप्त कर लेते हैं।
- कभी-कभी तीसरे देशों में उनकी शरणस्थलियाँ भी होती हैं।

आतंकवादियों की कमजोरियाँ :

अधिकतर आतंकवादी संगठनों की एक जैसी ही कमजोरियाँ होती हैं। इनमें से कुछेक इस प्रकार हैं :-

- राजनैतिक वातावरण में परिवर्तनों के प्रति अति संवेदनशीलता।
- सत्ता संघर्ष के प्रति नेतृत्व का संवेदनशील होना।
- सरकार के आतंकवादीरोधी कार्यक्रमों से इनके प्रभाव को कम किया जा सकता है।
- जटिल और निष्प्रभावी संचार प्रणाली इनकी कमांड और नियंत्रण में रूकावट डालती है।
- आतंकवादियों का अपराधी के तौर पर पीछा किया जा सकता है।
- आवागमन की पाबंदियाँ होती है।
- हथियारों और विस्फोटकों को लाने-ले जाने में कठिनाइयाँ होती हैं।
- उच्च-मारक क्षमता के हथियार प्राप्त करने में कठिनाइयाँ होती हैं।
- देश से बाहर सुरक्षित ठिकानों की समस्याएँ होती हैं।
- निजी डॉक्यूमैंटेशन की लगातार आवश्यकता होती है।
- काऊंटर प्रोपेगण्डा के प्रति संवेदनशीलता होती है।
- निजी सुरक्षा से संबंधित समस्याएँ होती है।
- आतंकवादी कार्रवाइयों की प्रतिक्रिया हो सकती है।
- विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए इनके निशानों में महत्वपूर्ण वृद्धि होनी चाहिए।
- नये परिवहन की आवश्यकता होती है।
- संगठन बढ़ने के साथ-साथ इसकी जरूरतों में वृद्धि होती है।
- बार-बार स्थान बदलने की जरूरत होती है।
- असंतोष और वंचन से इनका उत्साह प्रभावित होता है।
- पलायन, ग्रुप का टूटना और शेखियाँ मारने से इसकी सुरक्षा का प्रभावित होती है।
- वैचारिक और आप्रेशन से संबंधित विवादों से संगठन का नियंत्रण प्रभावित होता है।

आतंकवादी संगठनात्मक ढाँचे :

जब हम किसी सशस्त्र लड़ाकुओं के ग्रुप को देखते हैं तो उन्हें आतंकवादी के तौर पर वर्गीकृत करना आसान होता है। परन्तु उनकी गुप्त प्रकृति और सुरक्षा आवश्यकताओं के कारण उनके संगठनात्मक ढांचों के बारे में एकदम बताना अथवा दिखाना आसान नहीं होता है।

संगठनात्मक स्वरूप :

आतंकवादी ग्रुपों के विशिष्ट संगठनात्मक ढांचे को समझने के लिए इनके आप्रेशनल स्वरूप को समझना महत्वपूर्ण है।

अधिकतर आतंकवादी ग्रुपों की सामान्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं :-

- वे डर को बढ़ावा देकर लोगों को भयभीत करना चाहते हैं।
- जिन सरकारों से वह लड़ते हैं उनसे वे सैनिक तौर पर कमजोर होते हैं।
- वे अपनी सामरिक सफलता की तुलना अपनी मिशन की सफलता से नहीं करते हैं। चाहे उनके कृत्यों से उन्हें अपेक्षित परिणाम न मिलें लेकिन यदि इससे उनके पक्ष में कोई प्रचार होता है तो भी यह उनके लिए सफलता ही होगी।
- सामान्यतः शहरों में ही उनका आधार होता है।
- वह बहुत घूमते हैं और अपने पास अक्सर जाली पासपोर्ट रखते हैं। दूसरे देशों में भी उनके सुरक्षित ठिकाने होते हैं।
- वे गुपचुप तरीके से कार्रवाइयॉं करते हैं। कुछ विद्रोही संगठनों की प्रत्यक्ष शाखाएँ भी होती हैं।
- अन्य किसी भी कारण की अपेक्षा उनकी सुरक्षा ही उनके संगठनात्मक ढांचे को संचालित करती है।

कोशिकीय (सेतुतर) ढाँचा :

एक विशिष्ट आतंकवादी संगठन के मुख्य तत्व हैं, कमांड, आसूचना, कार्रवाई और समर्थन। बड़े संगठनों में कमांड और नियंत्रण की बनावट के लिए उपकमांड भी बना दी जाती हैं। कुछ बड़े संगठनों के मामलों में राष्ट्रीय कमांड भी हो सकती है जो कि पूरे संगठन की कार्रवाइयों के लिए जिम्मेवार होती है। उपकमांड को कोशिकाओं में बांटा जाता है। रेड ब्रिगेडस इसका स्पष्ट उदाहारण है। उनकी एक राष्ट्रीय कमांड थी, क्षेत्रीय कॉलम थे और इन्हें आगे फ्रंटस में बांटा गया था। फ्रंटस को एक या अधिक कोशिकाओं (सैल) में विभाजित किया गया था। इसके अतिरिक्त इन संगठनों में राजनीतिक ब्यूरो, प्रचार अनुभाग और संपर्क ग्रुप भी शामिल हो सकते हैं।

सेल (कोशिका) किसी आतंकवादी ग्रुप की एक आधारभूत इकाई होती है। सरकार द्वारा उठाए गए सुरक्षा कदमों और ग्रुप की बनावट के आधार पर कोशिकाओं के कार्य, संख्या और आकार निर्भर करता है। एक सुसंगठित आतंकवादी ग्रुप में सामान्यतः निम्नलिखित कोशिकाएँ (सेल) होती हैः

- कमांड
- आप्रेशन
- आसूचना
- सहायक

अच्छे स्थापित ग्रुपों में यह कोशिकाएँ अलग अलग विशेषज्ञता वाली हो सकती हैं। नये और सामान्य ग्रुपों में आप्रेशनल सैलों अथवा कोशिकाओ को ही कई तरह के कार्य करने होते हैं। एक कोशिका का आकार तीन से पॉच व्यक्तियों का होता है। जैसे-जैसे संगठन का आकार बढ़ता जाता है वैसे-वैसे इन कोशिकाओं के अनुभाग बनाए जाते हैं। एक अनुभाग में दो या तीन कोशिकाएं हो सकती हैं।

आसूचना कोशिकाएं संभावित निशानों/लक्ष्यों के बारे में सूचनाएं एकत्रित करती हैं और आंतरिक सुरक्षा कायम करती हैं। वे अक्सर मिशन से पूर्व लक्ष्यों पर नज़र या चौकसी रखती हैं। उन्हें काफी खंडों में विभाजित किया जाता है और वे कड़े सुरक्षा उपायों का पालन करती हैं।

सहायक कोशिकाएं अन्य कोशिकाओं को सहायता के विभिन्न कार्य करती हैं। सहायक कोशिकाएं प्रायः बड़ी होती हैं और उन्हें ज्यादा खंडों में नहीं बांटा जाता है । इनमें कैडर की अपेक्षा केवल आतंकवादियों से सहानुभूति रखने वाले तथा समर्थक शामिल हो सकते हैं।

आतंकवादी संगठन का ढ़ाँचा बनाने में सुरक्षा और संचार मुख्य पहलू है । इसलिए हिस्सों में विभक्त करने के कार्य का कड़ाई से पालन किया जाता है । कोशिकाओं के मध्य संचार रोक (cut out) द्वारा स्थापित किया जाता है ताकि दूसरे सदस्यों की पहचान और स्थान को सुरक्षित रखा जा सके । कोशिकाओं की पहचान और स्थान को पूरी तरह छिपा कर रखा जाता है ताकि एक जगह पर होने वाले नुकसान से पूरे ढाँचे पर कोई फर्क न पड़े ।

अपने मिशन (Mission) को जारी रखने के लिए आतंकवादी नागरिकों में से कुछ तत्त्वों के समर्थन का उपयोग करते हैं । प्रायः यह गुप्त तरीके से कार्रवाई करते हैं और प्रायोजित शक्तियों से केवल समर्थन प्राप्त करते हैं । फिर भी कुछ ऐसे ग्रुप हैं जो पूरी तरह से आत्मनिर्भर है और उन्हें किसी बाहरी समर्थन की जरूरत नहीं है । अतः आतंकवादियों के अस्तित्व के लिए उनकी सुरक्षा एक आवश्यक तत्त्व है ।

आतंकवादी ढाँचों के तत्त्व

बहुत से आतंकवादी संगठनों के ढ़ाँचों में साधारणतया नेतृत्व, कार्रवाई और मददगार तत्त्व शामिल होते हैं।

दृढ़ नेतृत्व

इनका नेतृत्व अक्सर अच्छा प्रशिक्षित और समर्पित होता है । अपने उच्च नेताओं से प्राप्त आदेशों पर अमल करना, नीतियाँ बनाना, मिशन की योजनाएं बनाना, नियंत्रण तथा निर्णयों को लागू करना नेतृत्व के मुख्य मिशन होते हैं । नेतृत्व को यह भी अवश्य सुनिश्चित बनाना होता है कि उनकी सभी कार्रवाइयाँ राजनीतिक तौर पर मज़बूत हों और यह भी सुनिश्चित हो कि उनकी यह कार्रवाइयाँ प्रतिक्रियात्मक न हों ।

सक्रिय कैडर (Active Cadre)

आतंकवादी संगठनों में सक्रिय कैडर कार्य को अन्जाम देते हैं । वे कार्रवाइयों को अन्जाम देते हैं । सक्रिय कैडर में बम गिराने, हत्याएं करने और दूसरे विशेष कार्यों को करने के विशषेज्ञ शामिल हो सकते हैं ।

सक्रिय समर्थन

अधिकतर आतंकवादी संगठनों के लिए सक्रिय समर्थन बहुत जरूरी होता है । समर्थन के व्यापक प्रत्यक्ष कार्य शामिल होते हैं । नये सदस्यों की भर्ती प्रचार, उद्देश्यों का प्रसार, फण्ड इकत्रित करना, रैलियों में वक्ताओं और मनोरंजन करने वालों का चुनाव, प्रदर्शन, विरोध रैलियों और मार्चें आयोजित करना इत्यादि भी शामिल हो सकते हैं। यह ग्रुप ऐसे लोगों का प्रयोग कर सकते हैं जिन्हें यह पता नहीं होता है कि वे किसी आतंकवादी संगठन या कट्टरवादी उद्देश्य का समर्थन कर रहे हैं ।

सीधा समर्थन देने वाले ग्रुप सुरक्षित आवास, प्रशिक्षण, राजनीति और लक्ष्यों के बारे में गुप्त सूचनाएं इक्कट्ठी करने और उन पर नज़र रखने इत्यादि का कार्य करते हैं। इन ग्रुपों में खरीद-फरोख्त और आपूर्ति के सैल भी शामिल होते हैं जो कि हथियार, गोला बारूद, विस्फोटक और विशेष मिशन या सामान्य आप्रेशन्स के लिए जरूरी दूसरे औज़ार इत्यादि प्राप्त करते हैं । ये लोगों, हथियारों और अन्य औजारों के लिए परिवहन की व्यवस्था भी करते हैं । बम बनाने के लिए भी ये जिम्मेवार हो सकते हैं ।

आधारभूत समर्थन/मूक समर्थन_

आधारभूत और मूक समर्थन से बाहरी सहायता प्राप्त होती है। बहुत से घुसपैठिए ग्रुपों में यह एक आवश्यक तत्त्व है । इनमें अधिकतर गैर षड़यन्त्र ऐसे लोग शामिल हो सकते हैं जो किसी षड़यन्त्र में शामिल नहीं होते हैं। ये अपनी सरकारों से निराश हो सकते हैं अथवा अपने जीवन से असन्तुष्ट हो सकते हैं । यद्यपि ये गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल नहीं होते हैं लेकिन आधार समर्थन ग्रुप, रैलियों, मार्चों और प्रदर्शनों में भीड़ का काम कर सकते है। संख्या में अधिक होने के कारण वे छूटें अथवा सुविधाएं प्राप्त करने के लिए अधिकारियों पर दबाब डालते हैं । अक्सर ये लोग अधिकारियों के साथ सहयोग करने में इच्छुक नहीं होते हैं । ये लोग सरकार के आतंकवाद-रोधी कदमों का मूक तौर पर प्रतिरोध करने के लिए अहिंसात्मक कदम उठाते **हैं ।**

यद्यपि इनकी तत्काल पहचान करना सम्भव नहीं होता है परन्तु किसी भी आतंकवादी घुसपैठिए ग्रुप में ये अनिवार्य तत्त्व हैं । लगभग प्रत्येक आतंकवादी संगठन के ढाँचे का यह एक भाग हैं ।

आतंकवाद के संबंध में नीति

आतंकवाद के बारे में अमेरिका की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है। भारत की काफी हद तक इसी रणनीति के आधार पर कार्य करता है।आतंकवाद का मुकाबला करने में वर्षों के अनुभव के बाद यह नीति विकसित हुई है। यह विभिन्न प्रशासनों की आतंकवाद के प्रति प्रतिक्रिया का परिणाम है । इस नीति के चार मूल सिद्धान्त हैं:-

(1.) आतंकवादियों को कोई छूट न देना

(2.) आतंकवाद का समर्थन करने वाली सरकारों पर दबाब डालना

(3.) आतंकवाद विरोधी प्रयासों को अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्रदान करना

(4.) आतंकवादियों को पहचानने, उनका पीछा करने, उन्हें पकड़ने, उन पर मुकादमा चलाने और उन्हें दण्डित करने के लिए व्यावहारिक पुलिस उपाय करना।

आतंकवादियों को कोई छूट न देना

अमेरिका सरकार का विश्वास तथा अनुभव यह बताता है कि आतंकवादी कार्रवाइयों को हतोत्साहित करने के लिए उन्हें किसी प्रकार की कोई छूट न देना सबसे अच्छा तरीका है यदि अपने कृत्यों से आतंकवादी कोई छूट प्राप्त कर लेते हैं उनके द्वारा इन कृत्यों को दोहराने की पूरी संभावना है ।

यद्यपि अमेरिका की लंबे समय से यह नीति रही है कि अमेरिका के बंधक बनाए गए लोगों के स्वास्थ्य, कुशल-क्षेम और उनकी सुरक्षित रिहाई के लिए हम किसी भी व्यक्ति से बात करने के लिए तैयार हैं । लेकिन बंधक बनाने वालों से बात करने का यह मतलब नहीं है कि हम उन्हें कोई ऐसी छूट दे देंगे जिससे आतंकवादियों का हौंसला बढ़ेगा ।

आतंकवाद का समर्थन भरने वाले देशों पर दबाब डालना

राष्ट्रों के प्रायोजन ने आतंकवादियों के आप्रेशन्स को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके सहयोगियों ने आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन करने वाले देशों के खिलाफ कड़े कदम उठाए हैं । इन देशों में स्थित अपने राजनायकों में कमी और सीमित राजनैतिक तथा आर्थिक प्रतिबन्ध लगाना ऐसे कदमों में शामिल है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के निर्देशों के अधीन आतंकवादियों को ट्रेनिंग देने वाले, उन्हें बढ़ावा देने वाले या संरक्षण देने वाले और आतंकवाद का निर्यात करने वाले राष्ट्रों के खिलाफ सीमित व्यापारिक प्रतिबन्ध और पूरे आर्थिक प्रतिबन्ध लगाए जा सकते हैं और लगाए जाएंगे ।

अन्तर-राष्ट्रीय सहयोग

आतंकवाद विरोधी बहुपक्षीय उपाय करने में मदद के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने व्यापक स्तर पर अपने अन्तर-राष्ट्रीय सहयोगियों के साथ कार्य किया है । इनमें गुप्त सूचनाओं का आदान-प्रदान, संबंधित देशों में सुरक्षा

उपाय और वाँछित आतंकवादियों के प्रत्यार्पण के मामलों में सहयोग शामिल है ।

आतंकवादी हमलों को रोकने और मुकाबला करने के लिए अमेरिका अन्य सरकारों के साथ द्विपक्षीय तौर पर कार्य करता है । इन प्रयासों के अधीन आर्थिक, तकनीकी सहायता और संकट प्रबन्धन में सहयोग किया जाता है। यह सहयोग ए.टी.ए. कार्यक्रमों के अतिरिक्त होता है। ए.टी.ए. कार्यक्रमों के अधीन अमेरिका ने 50 से अधिक देशों को सहायता प्रदान की है और विशेषज्ञता का आदान-आदान किया है।

व्यावहारिक पुलिस कार्य

आतंकवादियों का मुकाबला करते समय अमेरिका कानून के शासन पर जोर देता है । आतंकवाद का मुकाबला करने में पुलिस कार्य और गुप्त सूचनाओं का आदान-आदान महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । सहयोगी सरकारों को अमेरिका गुप्त सूचनाओं के आदान-प्रदान और भगौड़े आतंकवादियों की सूची परिचालित करने की सुविधा देता है । अमेरिका इन सरकारों को आतंकवादियों की नाम से पहचान करने, उनके लक्ष्यों को जानने, उनकी विचारधाराओं को जानने, उनको प्रायोजित करने वालों की पहचान करने और भविष्य की कार्रवाइयों की योजनाओं को जानने के बारे में प्रोत्साहित करता है। कानून लागू करने वाले अधिकारियों को आतंकवादियों को पकड़ने, उन पर मुकादमा चलाने और उन्हें दण्डित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । आतंकवादियों को दण्डित करने के लिए अभियोजन, साक्ष्यों का आदान-प्रदान और प्रत्यार्पण संबंधी कानूनों का बार-बार प्रयोग किया जाता है । आतंकवादी खतरों को रोकने के लिए निरंतर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और व्यावहारिक पुलिस कार्य सफलता की कुंजी है ।

.....

<u>परिशिष्ट-1</u>

आतंकवादी प्ररेक तत्त्व

इंस्टीच्यूट फॉर स्टडी ऑफ कॅन्फलिक्ट और रॉंड कारपोरेशन जैसे संगठनों ने आतंकवादी प्रेरक तत्त्वों के बारे में कई अध्ययन किए हैं । इन अध्ययनों के परिणाम का एक नमूना इस आकार है :

अल्पसंख्यक और राष्ट्रवादी समूह

राष्ट्रवादी वे लोग हैं जो स्वयं को सामूहिक तौर पर एक राष्ट्र समझते हैं । इसमें राष्ट्र के प्रति निष्ठा, राष्ट्र की संस्कृति एवं इतिहास का गौरव और आज़ादी की इच्छा इत्यादि शामिल है । अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में रा

ष्ट्रवाद एक महत्वपूर्ण ताकत बन गया है । राष्ट्रवादी भावनाओं, विशेषकर प्रत्येक देश में स्वयं शासन की भावना ने संसार में काफी परिवर्तन किया है ।

आज व्यापक स्तर पर राष्ट्रवाद है । यह "राष्ट्र-राज्य" के विकास के साथ-साथ विकसित हुआ है । राष्ट्रवाद के अच्छे या बुरे दोनों तरह के प्रभाव हो सकते हैं । राष्ट्रवाद जहाँ कई क्षेत्रों में राष्ट्र की उपलब्धियों के प्रति रुचि बढ़ाता है, वहीं यह राष्ट्रों के बीच प्रतिद्वन्द और तनाव भी बढ़ाता है । अति राष्ट्रवाद से जातीय घृणा और अल्पसंख्यक समूहों पर अत्याचार भी हो सकता है । किसी भी समाज में अल्पसंख्यक समूहों में ऐसे लोग होते हैं जिनमें प्रभावशाली तथा बहुसंख्यक ग्रुपों से कुछ भिन्नता होती है । उदाहरण के तौर पर अल्पसंख्यक ग्रुप, बहुसंख्यक ग्रुपों के सदस्यों से अलग दिखाई दे सकते हैं अथवा अलग तरह से बोल सकते हैं अथवा उनकी अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि हो सकती है । अतः अल्पसंख्यक समूहों के सदस्यों को अक्सर आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक जीवन में समान अवसर प्राप्त नहीं होते हैं । अल्पसंख्यक समूहों के लोग सामान्यता यह महसूस करते हैं कि उन्हें महत्व नहीं मिलता है जिससे उनका व्यवहार प्रभावित हो जाता है । दूसरों से अलग-थलग और एक समान कष्ट होने की भावना उन्हें सामाजिक तौर पर इक्कठा रहने का बल प्रदान करती है । अल्पसंख्यक समूह प्रभावशाली/बहुसंख्यक समूहों से क्षेत्रीय तौर पर अलग होने का प्रयास भी कर सकते हैं ।

इसका केवल यही अभिप्राय है कि अल्पसंख्यक देश के एक भाग में इक्कठा रहने या देश से बिल्कुल अलग होने की मांग कर सकते हैं । आयरिस रिपब्लिक आर्मी की अस्थाई शाखा, आई.आर.ए.(पी), संयुक्त राज्य अमेरिका में ब्लैक रैविलेशन आर्मी और फिलीपीन्स में मोरो लिबरेशन फ्रंट, अल्पसंख्यक और राष्ट्रवादी ग्रुपों के कुछ उदाहरण हैं ।

अलगाववादी

अलगाववाद सामान्य अर्थ के रूप में, सत्ता में हिस्सेदारी का पर्यायवाची है। यह आंदोलन साठ और सतर के दशकों में लोकप्रिय हुआ । इस दौरान केन्द्रीय सत्ता पर अफसरशाही का आरोप लगाया गया । ग्रेट-ब्रिटेन के कुछ गैर-अंग्रेज क्षेत्रों जैसे स्कॉटलैंड, बेल्स और उत्तरी आयरलैंड में भी अलगाववाद बनाम स्थानीय राष्ट्रवाद के बारे में तर्क मिलते हैं । यह केवल बहुत कम प्रयुक्त प्राचीन भाषाओं को जिन्दा करने की बात नहीं है परन्तु वास्तव में सत्ता का बदलाव है । कनाडा में एफ.एल.क्यू. अलगाववादी आंदोलन का एक उदाहरण है । एफ.एल.क्यू. चाहता है कि क्यूबेक अंग्रेजी भाषी कनेडा से हटें और अपने फ्रैन्च भाषी राज्य की स्थापना करें।

मार्क्सवादी क्रान्तिकारी ग्रुप

मार्क्सवादियों का विश्वास है कि उत्पादन के मुख्य साधनों पर निजी स्वामित्व होना ही वर्ग संघर्ष का मुख्य कारण है । लोगों की संपूर्ण स्वतंत्रता के लिए यह जरूरी है कि उत्पादन के साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व हो । सामान्य आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप सभी लोगों के समानता का अधिकार प्राप्त होगा । दमनकारी संस्थाएं और प्रथाएँ समाप्त हो जाएंगी । ऐसा तभी संभव है जब सर्वहारा वर्ग (मज़दूर वर्ग) पूंजीवादी वर्ग के खिलाफ विद्रोह करेगा।

नास्तिवाद (नाइलिस्ट) और अराजकतावादी समूह

1860 और 1870 के बीच रूस के बुद्धिजीवी वर्ग में से नास्तिवाद के सिद्धांत का जन्म हुआ । इसके दर्शन के अनुसार व्यक्तिगत अधिकारों में रुकावट डालने वाली कोई सत्ता नहीं होनी चाहिए । नास्तिवादियों का विश्वास है कि भविष्य में बदलाव के लिए वर्तमान राजनैतिक और सामाजिक संस्थाओं को नष्ट करना जरूरी है । अराजकतावादियों का विश्वास है कि हर प्रकार के नियम और सरकारें दमनकारी होती हैं और अनावश्यक हैं। इनको समाप्त कर दिया जाना चाहिए । कुछ अराजकतावादी इसके सक्रिय विरोध और सरकारों के खिलाफ आतंकवाद का समर्थन करते हैं ।

मिखाइल बाकुनिन के नेतृत्व में, 1960 के दौरान अराजकतावाद आरंभ हुआ । अराजकतावादियों ने सारे संसार में इसलिए क्रान्ति और हत्याएँ कीं, कि आतंक से बुराई ठीक हो जाएगी । जापानी रैड आर्मी नास्तिवादी ग्रुप का मुख्य उदाहरण है ।

भाड़े के वैचारिक सैनिक

भाड़े के वैचारिक सैनिक, आतंकवादी के तौर पर अपनी सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं । किसी भी विचारधारा के आतंकवादी ग्रुप किराए पर उनकी सेवाएँ ले सकते हैं क्योंकि वे किसी भी ग्रुप विशेष से संबद्ध नहीं होते हैं। अतः ऐसे ग्रुप अक्सर उनकी सेवाएँ लेते रहते हैं, जो अज्ञात रहना चाहते हैं, उनके लक्ष्य तक उनकी पहुँच नहीं है, अथवा किसी विशेष तकनीक में उनकी विशेषज्ञता नहीं है । क्योंकि अंधाधुन्ध तरीके से ये लोग अपना यह व्यापार चलाते हैं अतः उन्हें अक्सर आतंकवादी नैटवर्क भी कहा जा सकता है ।

आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका की नीति

अमेरिका किसी भी किस्म के, कहीं भी होने वाले आतंकवाद का सख्त विरोध करता है। अमेरिका की वर्तमान नीति है कि,

- अमेरिका सरकार घरेलू (राष्ट्रीय) और अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ है तथा अन्य राष्ट्रों के साथ मिलकर अथवा आवश्यकता पड़ने पर अकेले ही आतंकवादी कार्रवाइयों का पूरे उत्साह के साथ मुकाबला करने के लिए तैयार है।
- किसी भी व्यक्ति या समूह की आतंकवादी कार्रवाइयों को अमेरिकी सरकार राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए संभावित खतरा मानती है और उपलब्ध सभी कानूनी तरीकों से आतंकवाद का प्रतिरोध करेगी ।
- आतंकवाद का प्रयोग अथवा इसका सक्रिय समर्थन करने वाली सरकारों को इसका परिणाम भुगतना ही पड़ेगा । यदि कोई ऐसा प्रमाण मिलता है कि कोई सरकार अमेरिका के खिलाफ आतंकवादी कार्रवाई करने या करवाने का विचार रखती है तो अमेरिका अपने नागरिकों की संपति और हितों की रक्षा के लिए आवश्यक उपाय करेगी।
- अमेरिका सरकार आतंकवादियों को कोई छूट नहीं देगी, कोई फिरौती नहीं देगी, कैदी नहीं छोड़ेगी, अपनी नीतियाँ नहीं बदलेगी अथवा ऐसे कार्यों के लिए सहमत नहीं होगी जिनसे अतिरिक्त आतंकवाद को बढ़ावा मिलता हो । इसके साथ-साथ आतंकवादियों द्वारा बंधक बनाए गए अमेरिकी नागरिकों की सुरक्षित वापसी के लिए हर उपलब्ध साधन का प्रयोग करेगी ।
- मौलिक स्वतंत्रता अथवा लोकतांत्रिक नियमों का हनन किए बिना अमेरिका आतंवादियों के खिलाफ सख्ती से पेश आएगी और अन्य सरकारों को भी ऐसे ही कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

आतंकवादी कार्यवाहियों की विशिष्टताएं

आतंकवादी कार्यवाहियां (Operation) सक्रिय परन्तु साधारण तथा प्रहार करके पलायन करने वाली होती हैं ये कार्यवाहियां पीडित की अपेक्षा आम जनता और आमतौर पर वैधानिक सरकार को प्रभावित करने के उद्देश्य से की जाती हैं ।इन गतिविधियों को आसान इसलिए समझा जाता है क्योंकि इनमें छोटी संख्या में अच्छी तरह से प्रशिक्षित और समर्पित व्यक्ति होते हैं तथा सैनिक एवं अर्द्धसैनिक बल की गतिविधियों को सहायता देने, शासित करने, नियन्त्रित करने की बजाय एक छोटी संख्या के प्रशिक्षित एवं समर्पित ग्रुप की आतंकवादी गतिविधियों को शासित एवं नियन्त्रित करना आसान है ; अतः आतंकवादी कार्यवाहियां की योजना बनाना एवं इनका कार्य–संचालन साधारणतया आसान है ।

आतंकवादी कार्रवाहियां अपने उद्देश्य में आक्रामक होती है । आतंकवादी हर उस गतिविधि से बचने की कोशिश करते हैं जो उन्हे खतरे की स्थिति में डालती हैं क्योंकि प्रतिद्वंद्वी ताकतों से युद्ध करने एवं आमने –सामने की लड़ाई लड़ने के लिए उनके पास जनशक्ति या सैनिक सामग्री नहीं होती है । यहां तक कि बंधक, नाकाबन्दी एवं अपहरण की वारदात के दौरान आंतकवादी आक्रामक मुद्रा में ही होते है । बंधक बनाने वाली परिस्थिति के दौरान उन्हें सौदा करने का मौका मिलता है – कम से कम भाग निकलने का मौका । प्रहार एवं पलायन के इस सिद्धान्त से वे अक्सर स्वयं को अजेय दिखाने का अहसास कराने, प्रतिद्वंद्वी पर दबाव बनाने और अपने ग्रुप को वास्तवित आकार से अधिक बड़ा दिखाने का प्रयास करते हैं । इससे उनके प्रतिद्वंद्वी पर दबाव बना रहता है तथा ऐसा आभास दिलाता है कि यह ग्रुप बहुत बड़ा है जबकि ऐसा नहीं होता ।

आतंकवादी गतिविधियों का हम सभी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, लेकिन कानून प्रवर्तन संगठनों पर इनका विशेष प्रभाव पड़ता है क्योंकि उन्हें लोगों के जीवन और सम्पति की रक्षा करने एवं कानून एवं व्यवस्था कायम रखने की शपथ दिलाई गई होती है । सारे विश्व में बड़े हवाई अडडों के सुरक्षा उपायों को देखिए । बढ़ते हुए सुरक्षा मानदण्ड हवाई जहाजों के अपहरणों की बढ़ती हुई धटनाओं का प्रत्यक्ष परिणाम है । यदि अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो मध्य–पूर्व शांति प्रयासों को हमस और दूसरे अरब–ईसराइली शांति विरोधी आंतकी गुटों द्वारा की जाने वाली कार्यवाहियों से खतरा उत्पन्न हो सकता है।

आतंकवादी कार्यवाहियां कैसे नियोजित और संचालित होती है ?

सफलता सुनिश्चित करने के लिए आतंकवादी कार्यवाहियां बड़ी बारीकी और विवेकपूर्ण ढ़ंग से नियोजित की जाती है । आतंकवादी कार्यवाहियां (Operation) एक छोटे परन्तु उस कार्य के लिए विशेष तौर से प्रशिक्षित समूह द्वारा संचालित की जाती हैं । आंतकवादी गतिविधि के संचालन में सामान्यतः तीन मुख्य तत्व होते हैं – कमांड, कार्रवाही एवं सुरक्षा तत्व ।

आतंकवादी अपनी कार्यवाही (Operation) की योजना और तैयारी में, सुरक्षात्मक पहलू को ध्यान में रखते हुए, खण्डों के सिद्धान्त (Principal of Compartmenation) पर कार्य करते हैं । योजना और रिहर्सल के दौरान प्रत्येक तत्व को अलग अलग रखा जाता है ताकि प्रतिद्वन्द्वी के भेदने और किसी भी तरह की सूचना के लीक होने से बचा जा सके । इस कार्यवाही(Operation) की योजना बनाने में 18 महीने या इससे अधिक तक का समय भी लग सकता है ।

कई लक्ष्यों पर विचार किया जाता है तथा हो सकता है कि मुख्य लक्ष्य का चुनाव अंतिम क्षणों में ही सम्भव हो सके । अलग अलग टीमों को एक दूसरे की जानकारी दिए बिना कई लक्ष्यों पर एक साथ हमला किया जा सकता है, इस तरह एक आक्रामक ग्रुप दूसरे के लिए विकल्प का काम कर सकता है तथा इस प्रकार योजनाकार सफलता की सम्भवना को बढ़ा लेता है ।

निगरानी रखने वाले व्यक्ति दो मुख्य कारणों से भौतिक हमले की गतिविधियों में हिस्सा नहीं लेते । एक तो सूचना एकत्रित करने वाले व्यक्तियों को पीड़ित एवं हमले वाले स्थान के आस–पास काफी समय लगाना पड़ता है । यदि वे हमले की कार्रवाही में हिस्सा लेते हैं तो यह सम्भावना रहती है कि कोई व्यक्ति उन्हें पहचान लेगा क्योंकि वे उस स्थान पर कई बार जा चुके होते और हमले से प्रभावित व्यक्ति उनकी पहचान बना सकते हैं । दूसरा, सूचना देने वाले व्यक्ति के प्रशिक्षण पर बहुत समय और संसाधन लगाए जाते हैं तथा योजनाकार यह नहीं चाहते हैं कि सूचना देने वाले व्यक्ति किसी गतिविधि में मारे जाएं या पकड़े जाएं । वास्तव मे हमले से पहले ही सूचना देने वाले स्टाफ को बुला लिया जाता है ताकि कोई उन्हें कोई मौके पर देख न पाए जिससे किसी को शक हो जाए और सम्बन्धित अधिकारी सचेत हो जाएं। इससे अधिकारी लक्ष्य और लक्षित क्षेत्र की सुरक्षा को बढ़ा सकता है और आपरेशन असफल भी हो सकता है ।

आतंकवादी गतिविधियों की सबसे महत्वपूर्ण विशिष्टता यह है कि वे इसमें सामान्यतः उन लक्ष्यों पर आक्रमण

किया जाता हैं जो या तो असुरक्षित हो अथवा कम सुरक्षित हैं। साधारण शब्दों में, आतंकवादी आसान लक्ष्यों को चुनते हैं ।

आतंकवादी गतिविधियों से जुड़े सामान्य चरण

प्रत्येक आतंकवादी गतिविधि के चार मुख्य चरण होते हैं और यदि बंधक बनाने की स्थिति में समझौते की बात सामने आए तो तब पांचवा चरण सौदेबाजी भी जुड़ जाता हैं ।

धटना–पूर्व चरण

धटना पूर्व चरण में, आतंकवादी नेता यह निश्चित करते हैं कि उन्हें किस तरह की गतिविधि करनी चाहिए और इस गतिविधि से वे क्या हासिल करना चाहते हैं ? वे यह भी तय करते हैं कि हमला किस तरह करना हैं ? निगरानी रखने वाले व्यक्तियों की सूचना के आधार पर आपरेशन की योजना बनाई जाती है । आपरेशन के लिए जरूरी सभी तत्वों को एकत्रित किया जाता है और उसकी रिहर्सल की जाती है ।

प्रारम्भिक चरण

प्रारम्भिक चरण में गतिविधि की शुरूआत की जाती है । तब तक यह वह बिन्दू है जहां से साधारणतया वापिसी सम्भव नहीं हैं जब तक कि आपरेशन की योजना में पूर्व नियोजित मिशन को बीच में ही समाप्त करने की शर्त न रखी गई हो । आतंकवादियों के लिए यह सबसे अधिक खतरे वाला चरण है । इस बिन्दू तक परिस्थितियां पूरी तरह उनके नियंत्रण में होती है, एक बार जैसे ही भौतिक कार्यवाही शुरू होती है, तब उस पर उनका नियन्त्रण नहीं रहता । एक बार हमले की कार्यवाही शुरू हो जाए और किसी कारणवश यह विफल हो जाए है तब आतंकवादी आमतौर पर किसी आकस्मिक योजना का इस्तेमाल करते है । उदाहरण के लिए, अपहरण की सामान्य वैकल्पिक योजना सम्बन्धित व्यक्ति की हत्या है और इस हत्या के बाद वे क्रान्तिकारी हत्या के नाम पर इस हत्या की जिम्मेवारी लेते हैं, ना कि असफल अपहरण की ।

चरम–स्थिति चरण

चरम स्थिति के चरण की कोई निश्चित सीमा नहीं है, यह प्रारम्भिक चरण के तुरन्त बाद भी हो सकता है ।

अगर इसमें कोई सौदेबाजी वाली बात शामिल न हो, जैसे कि अक्सर हत्या के मामले में होता हैं । इस चरण में सुरक्षा चरम सीमा पर होती है, पुलिस और कानून लागू करने वालों पर सख्त निगरानी रखी जाती है, पुलिस रेडियो, समय समय पर होने वाली धटनाओं और मीडिया पर निकट से नजर रखी जाती है । यह धटना के धटित होने का भी संकेत देती है ।

समझौता चरण

आतंकवादी आपरेशन में एक ओर पक्ष सामने आता है जब आतंकवादी किसी बंधक तत्व को हासिल करने में सफल हो जाते है जैसे कि अपहरण। आतंकवादी कार्रवाही में जब आतंकवादी अपहरण जैसी धटना करके किसी का बंधक बनाने में सफल हो जाते हैं तो एक और चरण उभर कर सामने आता हैं इसे समझौता चरण कहते हैं । आतंकवादी इस चरण को जितना अधिक हो सके लम्बा खींचना चाहते हैं क्योकि इससे उन्हें समाचारों में स्थान तथा प्रचार मिलता है । आतंकवादी समझौते की अवस्था के दौरान कई मांगें रखते हैं जिनमें एक मांग जो आमतौर पर निश्चित रहती है वह है – आंतकवादियों को किसी सुरक्षित जगह जाने देना । जैसे कि ऐसे देश में जो उनके उद्देश्य में उनके साथ सहानूभूति रखता हो । यदि यह मांग नहीं रखी गई है, तो यह इस बात का संकेत हो सकता है कि आंतकवादी आत्मबलिदान पर तुला है ।

धटना के बाद का चरण

यह अन्तिम चरण है आतंकवादियों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण चरण है इस के दौरान आतंकवादी फिर एकत्रित हो कर बातचीत करते हैं कि आपरेशन (Operation) कहां तक सफल हुआ अथवा कहां तक चूक हुई । सौदेबाजी चरण के अभाव में आतंकवादी इस चरण में मीडिया का उपयोग कर सकते हैं ।

आतंकवाद की सामान्य गतिविधियां

आतंकवाद की सामान्य गतिविधियों में बम्ब गिराना, हत्याएं करना, अपहरण करना, बंधक, फिरौती एवं नाकाबन्दी करना, जबरदस्ती ले जाना, विमान का अपहरण, जुबान बन्द करना, आगजानी तथा सशस्त्र हमला करना इत्यादि है ।

–

बम्ब विस्फोट

आतंकवादी गुटों द्वारा आतंकवाद के लिए सबसे ज्यादा प्रयुक्त ढंग बम्ब विस्फोट है । बम्ब सस्ते होते हैं, बनाने और रखने में आसान हैं और मीडिया का तुरन्त ध्यान आकर्षित करते है । सुर्खियों में आने के अतिरिक्त डर

पैदा करते है और जान और माल की बर्बादी करते हैं ।

आतंकवादी बम्बों को ' विकसित विस्फोटक ढंग' **(Improvised Explosive Device)**के रूप में प्रयोग करते हैं जो कि सैनिक युद्ध सामग्री से अलग है, हालांकि आतंकवादियों द्वारा परम्परागत सैनिक विस्फोटक सामग्री का भी प्रयोग किया जाता है । भेजने के साधन, चलाने के तरीके, और प्रयोग के अनुसार इन्हें उप–वर्गीकृत किया जाता है ।

पहुंचाने का ढंग

बम किसी गाड़ी, व्यक्ति (फैंकने या यांत्रिक पद्धति द्वारा प्रक्षेपण से पहुंचाए जा सकते हैं), डाक या डिलिवी सेवाओं द्वारा भिजवाए जा सकते हैं ।

सक्रिय करने का ढंग

बम यांत्रिक, विद्युत, रसायन या रिमोट कन्ट्रोल विधि द्वारा सक्रिय किए जा सकते है ।

प्रयोग

बम्ब गिराने का लक्ष्य संकेतात्मक या वास्तविक योजना के अनुरूप हो सकता है लेकिन इसमें एक महत्वपूर्ण बात याद रखने योग्य यह है कि एक छोटे और अपेक्षाकृत कमजोर संगठन द्वारा अपने एक मजबूत प्रतिद्वन्द्वी पर आक्रमण का सबसे उत्तम तरीका बम्ब का प्रयोग करना है । इन बम्बों का आकार एक साबुन रखने के डिश से लेकर किसी गाड़ी पर लदे सैंकड़ों किलोग्राम के विस्फोटक जैसा हो सकता है ।

बम गिराने के सामान्य तरीके

बम गिराने के बहुत से तरीकों में जो कुछ विशेष प्रकार के होते हैं, वे इस प्रकार हैं :–

1 रिहर्सल एवं ड्राई रन

डम्मी बम, ब्रिफकेस और बम्ब रखने में प्रयुक्त अन्य वस्तुओं को एक ऐसे क्षेत्र में रख दिया जाता है जहां से कोई भी उसे असाधारण, संदिग्ध जानकारी सुरक्षा कर्मियों को सचेत कर दे ।

2 सामान इकटठा करना एवं बम्ब बनाना

आतंकवादी संगठनों के पास सामान्यतः बम बनाने वाला एक विशेष प्रशिक्षित व्यक्ति होता है, लेकिन बम बनाने की सामग्री विभिन्न सहायता दलों द्वारा एकत्रित की जाती है ।

3 बम को रखना

बम को लक्षित स्थान अथवा व्यक्ति तक पहुंचाया जाता है । बम रखने के लिए ऐसे व्यक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है जिन्हें यह पता भी नहीं होता कि उनके द्वारा पहुंचाए जा रहे पात्र (Container) में वास्तव क्या है ।

4 आक्रमण करने की विधियां

आक्रमण करने की विधि, बम बनाने वाले के ज्ञान एवं आधुनिक प्रक्रियाओं पर निर्भर करती है । फिर भी वाहन में बम रखना, पत्र या पार्सल में बम भिजवाना और हवाई बम आदि सामान्य बम विस्फोट की विधियां हो सकती है ।

5 वाहन बम

प्रथम वर्ग वाहन बम है। यह सबसे अधिक खतरनाक और विविध प्रकार के होते है । इन्हें पहचानना और करने से रोकना बहुत मुश्किल है । इस तरीके में गाड़ी को ही बम के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है अथवा गाड़ी को बम पहुंचाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है । इसमें कारें, बसें और यहां तक कि रेलवे बॉगी का प्रयोग भी किया जाता है । गाड़ी बमों की एक बात निश्चित तौर पर महत्वपूर्ण है कि बम विस्फोठ जितना बड़ा होगा, उतना ही मीडिया का प्रचार उन्हें मिलेगा । गाड़ी बमों का प्रयोग विभिन्न विधियों से किया जाता है, ये इस प्रकार है :–

1 गाड़ी की स्वारियों को मारने के लिए विस्फोटक सामग्री को गाड़ी के उपर या अन्दर रखना

। यह एक हत्या करने की चुनी हुई विधि है जो केवल 2 से 5 पाउंड के विस्फोटक सामग्री से भी प्रभावी हो सकती है । इस विधि में विस्फोटक को रसायनिक, यांत्रिक या रिमोट कन्ट्रोल से भी सक्रिय किया जा सकता है ।

2 विस्फोटक प्रक्षेपण सिस्टम के लिए गाड़ी का प्रयोग राकेट छोड़ने के लिए करना ।

इस तकनीक का प्रयोग वस्तुतः आई0आर0ए0 आतंकवादियों द्वारा किया जाता है । सबसे पहले एक ट्क चुराया जाता है और ट्क के बैड पर मोर्टार और राकेट रखे जाते है । तब ट्क को पहले से निर्धारित स्थान पर ले जाया जाता है और फिर एक एक करके या इकटठे राकेट दागे जाते है । यह अपेक्षाकृत अप्रभावी एवं गलत तकनीक है, फिर भी इससे मीडिया का ध्यान आकर्षित करने में सफलता मिलती है । ब्रिटिश प्रधानमन्त्री के विरूद्ध आई आर ए ने न0 10, डाउनिंग स्ट्रीट में इस योजना का प्रयोग किया था ।

3 पुलिस, मिलिटरी और अन्य विशेष लक्ष्यों पर आक्रमण करने के लिए एक एण्टीपर्सनल बम के रूप में वाहन का प्रयोग करना ।

यह तरीका आई आर ए और मध्य पूर्व आतंकवादियों द्वारा प्रयुक्त किया जाता है। विस्फोटक पदार्थ वाहन के अन्दर रख दिया जाता है । लक्षित व्यक्ति के आने जाने वाले रास्ते पर इस वाहन को पार्क कर दिया जाता है। जब वह व्यक्ति वहां से गुजरता है तो बम को रिमोट से सक्रिय कर दिया जाता है । इस तकनीक का इस्तेमाल युगल में किया जाता है । एक छोटे बम का प्रयोग ध्यान आकर्षित करने के लिए तथा एक बड़े बम का प्रयोग बड़ी दुर्धटनाएं करवाने के लिए किया जाता है।

4 वाहन का प्रयोग प्रायः बंधक ड्राइवर के द्वारा विस्फोट सामग्री को लाने ले जाने के लिए करवाना ।

वाहन का इस्तेमाल विस्फोटक सामग्री को निर्धारित लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए किया जाता है । आतंकवादी अक्सर अपहृत ड्राइवर का इस्तेमाल करते हैं और वे ड्राइवर से काम निकलवाने के लिए उसके नजदीकी परिवार के सदस्य को बंधक बनाते हैं ।

यह तरीका आई आर ए और मध्य पूर्व आंतकवादियो द्वारा अपनाया जाता है ।

5 अतिरिक्त मारक क्षमता वाले प्रचुर मात्रा मे विस्फोटक सामग्री से भरे वाहन का प्रयोग ।

इस प्रकार के बम 100 से 4000 पाउंड या उससे अधिक क्षमता के हो सकते है । इनका प्रयोग अधिकतर लक्ष्य विहीन या सांकेतिक लक्ष्यों के लिए किया जाता है । इनका मुख्य उद्देश्य डर अथवा आतंक पैदा करना होता है । उदाहरण के तौर पर, लेबनान में जुलाई–अगस्त, 1986 में 17 दिनों के दौरान 9 वाहन बमों द्वारा 109 लोग मारे गए और 596 धायल हुए । धटनाग्रस्त लोगों में अधिकतर नागरिक थे ।

6 सार्वजनिक परिवहन के वाहनों में बम रखना ।

आतंकवादी किसी खास समय पर भीड़भाड़ के दौरान सार्वजनिक परिवहन वाले वाहनों पर बम रखते हैं, इस विधि का प्रयोग आई आर ए, कई फिलिस्तिन आंतकवादी संगठनों द्वारा सफलतापूर्वक किया जा रहा है ।

7 विस्फोटक सामग्री भरे वाहन को लक्ष्य से टकराकर आत्मधाती हमला ।

इस प्रकार से हमले से बचना मुश्किल है । आतंकवादियों के लिए यह बहुत ही कारगर हथियार है । जितना बड़ा बम होगा उतना ही बड़ा विस्फोट होगा तथा उतना ही अधिक मीडिया का प्रचार मिलेगा । उदाहरण के लिए, 1983 में बेरूत में टी0एन0टी0 के 12,000 पाउंड के बराबर विस्फोट से लदा एक ट्क बेरूत हवाई अडडे के यू0एस0मेरिन मुख्यालय पर टकराया गया । परिणास्वरूप 241 सर्विसमैन मारे गए । ऐसा ही हमला फ्रांसीसी यू0एन0 शांति सेना के खिलाफ किया गया जिसमें 58 फ्रांसीसी सैनिक मारे गए । दो हफते से भी कम समय में आत्मधाती ट्क बमों ने लेबनान में यू0एस0, फ्रांस और ईसराइल के सैनिक बलों के 359 सदस्यों को मार डाला ।

पत्र या पार्सल बम

पत्र या पार्सल बम का सबसे बड़ा लिखित उदाहरण 1895 का है जब एक

जर्मन अराजकतावादी ने एक बर्लिन पुलिस अधिकारी के पास 25 पांउड का पैकेट बम भेजा । इसे पहचान लिया गया और निष्क्रिय कर दिया गया । प्रथम विश्व युद्ध के दौरान इस प्रणाली में सुधार किया गया और पत्र बमों द्वारा कई यूरोपीय नेताओं को मार डाला गया अथवा जख्मी कर दिया गया ।

पत्र या पार्सल बम का उद्देश्य किसी व्यक्ति विशेष को मारना या खामोश करवाना है । कई गुटों ने सामान्य जनता को परेशान करने के लिए भी पत्र बमों का इस्तेमाल किया गया है । संयुक्त राज्य अमेरिका में, एक अज्ञात बम फेंकने वाला, जो यूनि–बाम्बर के नाम से भी जाना जाता है, 1973 से लेकर आजतक कई बमबारी की धटनाओं के लिए उतरदायी है ।

हवाई बम

आधुनिक हवाई जहाज उड़ान के दौरान बम से हमलाग्रस्त हो सकते हैं । दबावीकृत सिलेण्डर की बाहरी झिल्ली को आसानी से उड़ाने से जहाज को बहुत नुकसान पहुंचाया जा सकता है । हवाई विस्फोट के दौरान, सारे सबूत हवा में ही नष्ट हो जाते हैं जिससे जांच करने वाले अधिकारियों को भी परेशानी होती है ।

1 ऐतिहासिक रूप से, हवाई बमों को रखने का मुख्य स्थान सामान रखने वाला कम्पार्टमैंण्ट है । बम बनाने वाला, एक टाइमर या बैरोमैटरिक दबाव द्वारा चालित विस्फोटक सामग्री को सूटकेस या चैक बैगेज में रख लेगा । तब वह लक्षित वायुयान की टिकट खरीदेगा, नाम दर्ज करवाएगा, अन्दर रखे बम के साथ सामान की जांच करवाएगा और फिर सुविधाजनक ढंग से फलाईट छोड़ देगा ।
इस तकनीक में परिवर्तन करते हुए अब वायुमार्ग से जा रहे ऐसे सामान में बम रख दिया जाता है जो यात्री के साथ नहीं ले जाया जाता है ।

2 हवाई जहाज के यात्री केबिन में बम रखने के लिए आतंकवादियों द्वारा प्रयुक्त तीन सम्भावित तरीके हो सकते हैं ।

सर्वप्रथम आतंकवादी अपने शरीर के साथ बम बांधकर सुरक्षा जांच करवा लेता है । जहाज के अन्दर पहुंच कर वह आत्मधाती दस्ते के रूप में जहाज में विस्फोट कर सकता है या बम को जहाज में कहीं रख देगा ताकि बाद में विस्फोट हो सके । रास्ते में जब जहाज रूकता है तो आतंकवादी जहाज से उतर जाता है और बम जहाज में ही रखा रहता है ।

दूसरा, आतंकवादी किसी यात्री को धोखा देकर उसे बम ले जाने का माध्यम बनाना या उसके सामान में चुपके से बम रख देता है ।

आखिरी, ग्राउंड पर किसी षडयन्त्रकारी द्वारा वायुयान के अन्दर बम छिपा दिया जाता है या फिर किसी आसानी से पहुंचने वाले कम्पार्टमैण्ट जैसे वील–वैल, गैली कन्टेनर में रख दिया जाता है ।

छलावा

बम होने की झूठी अफवाह या अपनी विश्वसनीयता को बरकरार रखने के लिए छलावे का प्रयोग किया जाता है । आतंकवादियों को पता है कि झूठी अफवाहों और जिन्दा बमों के सही अनुपात द्वारा सुरक्षाकर्मियों को लम्बे समय तक दिक्कत में रखा जा सकता है । ये छलावे लोगों के मन में भय और अफरातफरी कर माहौल बनाते हैं ।

अपहरण

अपहरण वह तकनीक है जिसमें साधारणतया संबंधित व्यक्ति के स्वास्थ्य और सुरक्षा का ध्यान रखा जाता है । इसलिए आई0ई0डी0 उपयोग में नहीं लाए जाते सफलतापूर्वक अन्जाम देने के लिए यह आतंकवादी संगठन का सबसे कठिन आपरेशन होता है । अपहरण के आपरेशन के दौरान सौदेबाजी के समय एक निश्चित सीमा तक सुरक्षा रहनी चाहिए, जबकि बंधक बनाने की कार्रवाही में ऐसा जरूरी नहीं होता । एक सफल अपहरण से आतंकवादियों को पैसा मिल सकता है, जेल में बन्द सहयोगी रिहा हो सकते है तथा मोलभाव के दौरान विस्तृत प्रचार भी मिलता है । यह आतंकवादी संगठनों के लिए अति महत्वपूर्ण अभियान होता है । कुछ देशों में फिरौती के लिए अपहरण की उतनी ही सम्भावना है जितनी राजनीति से प्रेरित अपहरण की । इसमें अपराधी आतंकवादियों जैसे तरीके अपनाते है तथा पैसों के लिए अपहरण की धमकियों से नागरिकों के मन में डर की भावना बैठ जाती है । एक बार जब एक व्यक्ति को अपहरण के लिए लक्ष्य बनाया जाता है, तो उसमें आतंकवादियों के लिए दो मुख्य उपाय होते हैं । वे पीड़ित को किसी स्थान से उठा लेते हैं या रास्ते से अपहरण कर लेते हैं । स्थायी स्थान, व्यक्ति का निवास स्थान, कार्यस्थल या अन्य कोई स्थान जहां वह बहुत बार जाता है जैसे रेस्तरां, नाइटकल्ब, चर्च आदि हो सकता है । जब लक्षित व्यक्ति दो स्थानों के बीच भ्रमण करता है तो वह पैदल या किसी वाहन का उपयोग करता है । दोनों मौकों पर सौदेबाजी का चरण आता है जो अपहरण के मुख्य उद्देश्यों में से एक हो सकता है – प्रचार पाने के इलावा, राजनैतिक या वित्तिय फायदा हो सकता है । सौदेबाजी लम्बे समय के बाद गुप्त

रूप से, जेल गए अपने साथियों के बदले अपहरण किए गए व्यक्ति को देने का मोलभाव करना, या आतंकवादियों की मांगे पूरी करवाना या पैसों की फिरौती द्वारा की जाती है ।

एक निश्चित स्थान से अपहरण से सम्बन्धित चरण निम्नलिखित है :–

1 भेदना :

विभिन्न स्थानों में छलकपट द्वारा प्रवेश करने में आतंकवादियों की कल्पनाशीलता ही आधार होती है । वे सेल्समैन, सर्वे करने वाले, पुलिसमैन, डाक देने वाले तथा डिलिवरी देने वाले का रूप बनाकर सूचनाएं प्राप्त करते है । जब ये सारे तरीके असफल हो जाते है तब वे जबरन प्रवेश करते है ।

2 सम्बन्धित व्यक्ति को नियन्त्रण में लेना

अपना नियन्त्रण में रखने के लिए कुछ मामलों में हिंसा की जरूरत भी पड़ती है और अपने मिशन की पूर्ति हेतु आतंकवादी कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं । यह देखा गया है कि कुछ अपहरण के प्रयासों में जब लक्षित व्यक्ति ने विरोध किया तो उनकी हत्या कर दी गई ।

3 पहचान में आए बिना सम्बन्धित व्यक्ति को ले जाना

4 अपने प्रभावयुक्त क्षेत्र में संबंधित व्यक्ति को स्थान्तरित करना

संबंधित व्यक्ति को अपने प्रभाव वाले क्षेत्र में जे जाने के लिए आतंकवादी रास्तों में अपने वाहनों तथा अपनी पहचान को बदल देते है ताकि अधिकारियों को पीछा करने में मुश्किल आए ।

रास्ते से अपहरण करने के विशिष्ट चरण निम्नलिखित हैं:–

1 रास्ते के साथ–साथ हमला करने के स्थान का चुनाव

स्थान का चुनाव संबंधित व्यक्ति की सुरक्षा के हिसाब से किया जाता है । जितना सम्भव हो सके

आंतकवादी एक निश्चित स्थान के सबसे कमजोर जगह से उस व्यक्ति पर हमला करने की योजना बनाते हैं ।

2 हमले की जगह अलग करना

जो तरीके पहले प्रयुक्त किए गए हैं, वे है – हमले से पहले सुरक्षा बलों का नकली फोन करना, फोन लाइनें व्यस्त करना, नकली पुलिस अवरोधक और दुर्धटना स्थल जैसे अन्य ध्यान बंटाने वाले ढंग ।

3 लक्षित व्यक्ति या वाहन को रोकना

पहले की धटनाओं मे वाहन रोकने के लिए कई ढंग अपनाए जाते रहे हैं जैसे सड़क पर अवरोधक रखना, दुर्धटना करना, अड़चने पैदा करना, रोकने के संकेत इस्तेमाल करना, वाहन भिड़ाना तथा अपहरणकर्ता का पुलिस की वर्दी में होना ।

4 सुरक्षा खत्म करना

आतंकवादी, अपहृत किए जाने वाले व्यक्ति को बचाते हुए, और सुरक्षाकर्मियों पर गोलीबारी करते हैं ।

<u>हाईजैकिंग / स्काईजैकिंग अपहरण या विमान अपहरण</u>

बल प्रयोग के द्वारा वाहन, उसके यात्रियों एवं सामान को जबरदस्ती कब्जे में लेना हाइजैंकिग कहलाता है । इसका उद्देश्य सरकार को दिक्कत में डालना, सरकार से छूट लेना और लोगों का समर्थन पाना है ।

स्काईजैकिंग, हाइजैकिंग का एक तरीका है जिसमें हवाई जहाज को कब्जे में लिया जाता है । स्काईजैकिंग वह ढंग है जो साठवे व सत्रवें दशक में उपयोग किया जाता था लेकिन अस्सीवे दशक के शुरू में आकर कम हो गया । सुरक्षा के इन्तजाम अब पहले से कहीं ज्यादा हैं, हवाई जहाजों का अपहरण फिर भी जारी है । बहुत सी धटनाओं में आई0ई0डी0 या नकली आई0ई0डी0 का प्रयोग, पुलिस हमलों को निरूत्साहित करने एवं बंधकों को आज्ञा पालन पर बाध्य करने के लिए, दरवाजे और आपातकालीन दरवाजों पर बूबी ट्रेप के रूप में किया जाता है ।

स्काई जैकिंग के सामान्य चरण है :–

1 लक्षित देश का चुनाव करना

2 स्काईजैकिंग के लिए स्थान एवं समय को चुनना

3 जहाज के प्रकार की पहचान करना

4 संबंधित स्थान का सैनिक परीक्षण करना

5 उस हवाई पतन या वायुयान का निरीक्षण करना जिसका अपहरण करना है ।

6 सुरक्षा उपायों, सुरक्षा कार्मिकों एवं सुरक्षा सामग्री को भेदना

7 हवाई जहाज को कब्जे में लेने की कार्रवाही करना

8 मांगे एवं समय सीमा निर्धारित करना, यदि कोई हो तो

9 सौदेबाजी चरण, यदि लागू हो तो

हाल ही में अल्जीरिया में हुए विमान के अपहरण के मामले में, आतंकवादियों का अन्तिम लक्ष्य जहाज कों पेरिस, फ्रांस तक उड़ाना था तथा जहाज में बम रखवाकर शहर में गिराना था । इस मामले में सौदेबाजी सिर्फ जहाज की उड़ान के लिए ईंधन लेने के लिए हुई थी ।

हत्या

हत्या किसी बम या छोटे हथियार द्वारा पहले से ही चुने हुए लक्षित व्यक्ति को मारना है । यह आतंकवादियों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला सबसे पुराना तरीका है और आज भी सभी आतंवादी संगठन इसका प्रयोग करते है । हत्या करने की योजना एवं तरीका वैसा ही है जैसा कि अपहरण करने का । एक हमलावर द्वारा बन्दूक से या धावा बोलकर या धात लगाकर बम से इस तकनीक को अन्जाम दिया जा सकता है । सभी प्रकार की हत्याओं में कई सामान्य तत्व है :–

1 पीड़ितों की गतिविधियां एक जैसी रही थी

2 सभी द्वारा सूचनाओं एवं संवेदनशील इशारों को नजरअन्दाज किया गया

3 आतंकवादियों के आपरेशनल वातावरण में भी सभी सम्भावित खतरों की अनदेखी की ।

4 सभी प्रकार की धटनाएं सामान्य ज्ञान एवं सुरक्षात्मक उपायों द्वारा रोकी जा सकती थी ।

शस्त्रों से हमला

सशस्त्र हमलों के दो प्रकार होते हैं । धावा बोलना और धात लगाकर आक्रमण करना। धात लगाने में बम को मुख्य हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है ।

धावा बोलना

शस्त्र और अस्त्र हथियाने के लिए आतंकवादी धावा बोलते है जो बाद में आतंकवादियों द्वारा भवन एवं सामग्री को नष्ट करने के लिए उपयोग किया जाता है । बैंक डकैतियां भी एक प्रकार का हमला है हालांकि उनका उद्देश्य अपनी गतिविधियों के लिए धन की आपूर्ति करना है ।

धात लगाना

एक सही तरीके से नियोजित धात कभी असफल नहीं होती । यह आतंकवादी धातों के बारे में विशेष रूप से सही है जो कि सही तरीके से नियोजित होती हैं, जिनका विकल्प रखा जाता है, जिनका पूरी तरह से अभ्यास किया जाता है एवं उचित रीति से निष्पादित की जाती हैं, वे कभी असफल नहीं होती है । आतंकवादियों के पास इस गतिविधि के लिए बहुत समय होता है एवं वे कई हफते इस गतिविधि को तैयार करने में लगा देते हैं । धात लगाने का मुख्य उद्देश्य पीड़ित का अपहरण करना या मारना होता है । इस प्रकार का धातक हमला किसी विस्फोटक धात या हथियार वाली धात के रूप में हो सकता है ।

1 विस्फोटक धात

जिसे रास्ते से लक्ष्य गुजरता है वहां सड़क पर या एक तरफ खड़े वाहन में या सम्बन्धित व्यक्ति के वाहन के साथ बम लगा दिया जाता है । दूसरी सम्भावना है कि लक्षित व्यक्ति को धोखा देकर उसके धर या दफतर में बम रखवा दिया जाता है।

2 हथियार द्वारा धात लगाना

हथियार वाली धात में छोटे हथियारों या सम्भवतः राकेट लांचर का प्रयोग किया जाता है ।

3 चलते वाहन पर हमला

चलते वाहन पर हमला करना एक प्रकार की हथियार युक्त धात है जिसे अन्जाम देना बहुत आसान है । चुने हुए व्यक्ति के आने जाने का एक रास्ता उसकी दिनचर्या का भाग होता है जिसका पता आतंकवादी अपने सर्वेक्षण से लगा लेते हैं । आतंकवादी हमला करने की जगह चुनते है तथा संबंधित व्यक्ति की कार की क्षमता का पता लगाते हैं । जब वे हमला करने के लिए तैयार हो जाते हैं तब वे पीड़ित व्यक्ति की कार का पीछा करते है, आगे निकलकर अपने हथियार बाहर निकालकर उस व्यक्ति पर गोली चलाते हुए निकल जाते हैं । चलते वाहन पर हमला करने का दूसरा तरीका मोटर साइकिल का प्रयोग करना है ।

4 अंगहीन करना

अंगहीन बनाने का कार्य आतंकवादी द्वारा अपने संगठन के सदस्यों को अपने तरीके से न्याय देने के लिए किया जाता है । जिन सदस्यों ने उनके सुरक्षा नियम भंग किए हैं, उनका साथ छोड़ जाते हैं या जो सूचना देने वाले बन जाते हैं । अंगहीन करना अत्याधिक प्रभावी होता है क्योकि इससे संगठन के सदस्यो को एक सबक मिलता है और वे लगातार डरते हैं । आयरिश रिपब्लिक आर्मी द्वारा धुटने तोड़ना, अंगहीन बनाने की तकनीक का एक अच्छा उदाहरण है । हल्के आई0इ0डी0 द्वारा अंगहीन बनाना एक प्रकार का तरीका है जिसमें मारने के स्थान पर अपंग बनाना बेहतर समझा जाता है ।

5 आगजनी

आतंकवादी गतिविधि का एक दूसरा प्रकार आगजनी है । यह उन आतंकवादी गुटों द्वारा अपनाया जाता है जो बड़े आतंकवादी गुटों की तरह बहुत ज्यादा संगठित और प्रशिक्षित नहीं है

। आगजनी अपेक्षाकृत साधारण गतिविधि है जो नए नए गुटों द्वारा आत्मविश्वास प्राप्त करने के लिए की जाती है । कई आतंकवादी संगठन विस्फोट एवं ज्वलनशील पदार्थ (Improvised Incendiary Devices) , जो विभिन्न दर्जे की क्षमता का होता है, का इस्तेमाल करते हैं । पशु अधिकारों एवं वातावरण से जुड़े आतंकवादी संगठन ऐसे हथकंडे अपनाते है ।

आगजनी गतिविधियों से संसाधनों को नुकसान पहुंचाता है, सुर्खियों में खबरें छपती हैं, और जन साधारण के मन में भय पैदा होता हैं ।

विस्फोटक तथा उनका प्रभाव
(Explosive & their effects)

यह अनुभाग विभिन्न विस्फोटक पदार्थों के बारे में रूपरेखा देता हैै, विस्फोटक पदार्थ कैसे काम करते हैं, विस्फोटकों के मूलभूत प्रकार तथा फटने पर होने वाले प्रभावों की सामान्य प्रस्तावना देता है।

उद्देश्य **(Object)**

इस पाठ की समाप्ति तक आप इस योग्य होंगे कि,

- विस्फोटन की परिभाषा दे सकें।
- तीन मुख्य प्रकार के विस्फोटकों के नाम गिना सकें।
- विस्फोटन के विभिन्न प्रभावों में भेद कर सके।
- विस्फोटकों को उच्च व निम्न क्रम में रख सकें।
- विस्फोटकों की मुख्य श्रेणियों के नाम बता सकें।
- यह वर्णन कर सकें कि विस्फोटक कैसे काम करता है।

- विस्फोटन प्रक्रिया के तीन मुख्य चरणों में सफलतापूर्वक प्रयुक्त होने के क्रम की संरचना कर सकें।
- विस्फोटक पदार्थों को निम्न, प्राथमिक उच्च, माध्यमिक उच्च श्रेणियों में रखना।
- विशिष्ट कार्यों को करने हेतु विस्फोटक चार्ज का चुनाव।

विस्फोटकों का परिचय **(Introduction to Explosives)**

इस अनुभाग में निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा होगीः

- विस्फोटन क्या है?
- विभिन्न प्रकार के विस्फोटक क्या है?
- विस्फोटन के क्या प्रभाव है?
- विस्फोटकों का क्या वर्गीकरण है?
- विस्फोटक काम कैसे करते हैं?
- विभिन्न प्रकार के विस्फोटक कैसे प्रयुक्त किये जाते हैं?
- विस्फोटक के असर को खत्म कैसे किया जा सकता है?

विस्फोटन क्या है? (What is an explosion)

एक सीमित स्थान से जब गैसों का अचानक व प्रचंड प्रवाह निकलता है जिस के साथ उच्च तापमान, तेज झटके और ऊंची आवाज निकलती है, उसे विस्फोटन कहते हैं। ताप और गैसों का प्रचंड प्रवाह विस्फोटन का बुनियादी तत्व है जो कि तीनों प्रकार के विस्फोटनों में मिलता है।

तीन बुनियादी प्रकार के विस्फोटन (Three basic types of explosion)

यांत्रिक विस्फोटन (Mechanical Explosion)

यांत्रिक विस्फोटन में पदार्थ का रूप परिवर्तित होता है जैसे पानी को गैस अर्थात वाष्प में बदला जाए। बर्तन की प्रतिरोधक क्षमता को उसके अन्दर दबाव बढ़ाते हुए कम की जाती है जैसे जब स्टीम बायलर फटता है।

रसायनिक विस्फोटन (Chemical Explosion)

किसी पदार्थ, जो ठोस व तरल हो, का बहुत तेजी से गैसे में बदलना रासायनिक विस्फोटन है। इन गैसों का आयतन उन पदार्थों से बहुत अधिक होता है जिससे वे बनती हैं। नाभिकीय विस्फोटन को छोड़कर, शेष सभी निर्मित विस्फोटक रसायनिक विस्फोटक होते हैं।

नाभिकीय विस्फोटन (Nuclear Explosion)

नाभिकीय विस्फोटन दो तरीकों से किया जा सकता है–

फिशन (Fission) जिसमें एटम की नाभिका को तोड़ना या फ्यूजन (Fusion)

जिसमें बहुत बल के अन्तर्गत दो एटमों की नाभिकाओं को जोड़ना होता है।

विस्फोटन की बुनियादी शब्दावली (Basic Explosive Terms)

विस्फोटकों के वर्गीकरण को समझने से पहले उनकी शब्दावली का ज्ञान होना आवश्यक है, जो निम्नलिखित है–

शुरुआत **(Initiation)**

यह विस्फोटक क्रिया का प्रथम चरण है जिसमें वह प्रक्रिया शुरू की जाती है तथा जिससे विस्फोटन होता है।

इसका अच्छा उदाहरण अग्नीकुण्ड में आग जलाना है। एक माचिस की तीली जलाई जाती है और कागज को ज्वलन बिंदू तक गर्म किया जाता है। कागज जलता है जो साथ वाले पदार्थ को ज्वलनशील बनाकर आग जलाता है।

ज्वलन (Combustion) ज्वलन से गर्मी, रोशनी और गैसें बनती है। ज्वलन की मुख्य किस्में इस प्रकार हैं–

धीमा ज्वलन (Slow Combustion) ; यह पदार्थों को साधारण ज्वलन बिन्दू पर पहुंचाकर

जलाने की प्रकिया है।

तेज ज्वलन (Rapid Combustion) तेज ज्वलन को विस्फोटन (explosion) कहा जाता है। एक आन्तरिक ज्वलन इंजन में, स्पार्क प्लग से उठी चिंगारी से गैसों के मिश्रण में तेज ज्वलन होता है जो विस्फोटकारी होता है।

तुरंत ज्वलन (Instateneous Combustion) तुरंत ज्वलन प्रचंड अग्नि विस्फोट (detonation) कहलाता है। इसमें ठोस या द्रव तुरंत सीधे गैस में बदलता है और विस्फोटन करता है। इससे तरंग (shockwave) पैदा होती है।

विस्फोटक तथा उनके प्रभाव (Explosives & their effects)

एक विस्फोटक पदार्थ की उपयोगिता इस बात में है कि उसकी ज्वलन शीलता की गति कितनी है। एक लकड़ी के टुकड़े और डायनामाइट की छड़ की जलने की प्रक्रिया एक जैसी होती है क्योंकि दोनों अपना रूप बदलते हैं और इससे वे उष्मा, रोशनी पैदा करते हैं तथा ज्वलन के दौरान गैस पैदा करते हैं। लकड़ी के जलने (धीमा ज्वलन) तथा डायनामाइट लगाना (तुरंत ज्वलन) में फर्क उन की ज्वलन गति (rate of combustion) के कारण होता है।

विस्फोटक लगाने की गति (Detonation Velocity)

यद्यपि विस्फोटक लगाना तुरंत विधि मानी जाती है फिर भी विस्फोटक पदार्थ को ज्वलन में कुछ समय लगता है जिसे विस्फोटक लगाने की गति का नाम दिया जाता है।

डिफ्लेगरेशन (Deflagration)

यह वह तेज ज्वलन है जो कभी विस्फोटन में नहीं बदलता।

उच्च प्रकार का विस्फोटन लगाना (High order detonation)

उच्च प्रकार के विस्फोटन में विस्फोटक अधिकतम गति व पूर्ण रूप से ज्वलित होता है।

निम्न प्रकार का विस्फाटन (Low order detonation)

इस प्रकार के विस्फोटन में या तो विस्फोटक पदार्थ का अधूरा ज्वलन या पूरा ज्वलन होता है परन्तु अधिकतम गति से कम होता है। इसका कारण हो सकता है कि पदार्थ खराब हो, शुरुआत करने वाले और विस्फोटक में ठीक स्पर्श न हो, विस्फोटक में हवा के बुलबुले होने के कारण झटके की तरंग में रुकावट हो, शुरुआत में पर्याप्त ऊर्जा न दी जाए या इस में किन्हीं कर्मियों का समिश्रण हो।

विस्फोटक के वर्गीकरण के पीछे उसे लगाने की गति होती है। विस्फोटक के दो वर्ग हैं– उच्च विस्फोटक और निम्न विस्फोटक ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वे संवेदनशीलता और लगाए जाने के तरीके के कारण अलग अलग होते हैं।

निम्न विस्फोटक (Low Explosives)

निम्न स्तर के विस्फोटक चलने की बजाय फुस्स हो जाते हैं, कम ताप पैदा करते हैं तथा कम ज्वलनशील होते हैं। ब्लैक पाउडर तथा धुआं रहित पाऊडर दो प्रकार के निम्न विस्फोटक हैं। यदि निम्न विस्फोटकों को खुले स्थान में किया जाए तो तेज गति से फुस्स जो जाते हैं। जब उन्हें कम स्थान में रखा जाए वे तोड़ फोड़ वाले नुकसान का कारण बनते हैं।

निम्न विस्फोटक पदार्थ (Low explosive substances)

काला पाउडर (Black Powder)

काला पाउडर सेफ्टी फ्यूज, ज्वलन ट्रेन, आगे बढ़ाने वाले कारक (Propellent) तथा आमतौर पर पाइप बमों में प्रयुक्त होता है। इस का रंग काला व सलेटी काला होता है। पांच सेंटीमीटर (2 इंच) ब्यास वाले घने पाउडर के दाने के साईज में ग्रेनुयूल के रूप में काला पाउडर निर्मित किया जाता है। इस के दाने के आकार से निर्धारित किया जाता है कि ब्लैक पाउडर किस गति से जलेगा। पतले दानों की अपेक्षा मोटे दाने कम गति से जलते हैं।

ब्लैक पाउडर वाला सेफ्टी फ्यूज 1½ से 1¾ मिनट प्रति मीटर (30 से 45 सैकंड प्रति फुट) जलता है। यदि ठीक प्रकार से स्टोर किया जाए तो ब्लैक पाउडर खराब नहीं होता फिर भी यह नमी सोख लेता है जिससे इस का प्रभाव कम हो जाता है। फिर भी एक बार सुखा लेने पर इस का असर वैसा ही होता है।

काला पाउडर में 75% पोटाशियम या सोडियम नाईट्रेट 10% सल्फर तथा 15% चारकोल होता है।

सुरक्षा टिप्पणी : खुले हुए काले पाउडर के आसपास कोई आग या धुम्रपान नहीं होना चाहिए।

धुआं रहित पाउडर (Smokeless Powder)

यह पाउडर पाइप बम में प्रयुक्त होता है तथा छोटे हथियार, तोप या राकेट में धकेलने वाले यंत्र के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। यह प्रायः सलेटी या काले रंग का होता है। इसे दानेदार रूप में तैयार करते हैं परन्तु यह वेफर, फ्लेक या गोले के आकार का भी हो सकता है।

धुआंरहित पाउडर सिंगल–बेस या डबल–बेस होता है। सिंगल में मुख्य घटक जिलेटिन युक्त नाइट्रो सेल्यूलोज होता है। डबल–बेस में नाइट्रो सेल्यूलोज के साथ–साथ नाइट्रोग्लीसरीन या अन्य तरल आर्गेनिक नाइट्रेट होता है।

विकसित निम्न विस्फोटक पदार्थ (Improvised low explosive substances)

बम के निर्माण में अन्य विकसित निम्नकोटि के विस्फोटक पदार्थ प्रयुक्त किए जा सकते हैं जैसे क्लोरेट तथा चीनी या मैंचहैड।

उच्च विस्फोटक पदार्थ (High Explosives)

उच्च विस्फोटक जलने की बजाए डेटोनेट होते हैं तथा तुरंत समाप्त हो जाते हैं वे बरबाद या ध्वस्त करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। इन्हें बड़ी बरबादी या ध्वस्त करने के लिए सीमित (confine) करने की जरूरत नहीं है।

प्राथमिक उच्च विस्फोटक पदार्थ (Primary High Explosives)

प्राथमिक उच्च विस्फोटक पदार्थ उष्मा, शॉक, रगड़, स्टेटिक विद्युत, ज्वाला या इनके समिश्रण के प्रति बेहद संवेदनशील होते हैं। वे तुरंत जल उठते हैं तथा डेटोनेशन गति तक जल्दी पहुंच जाते हैं। प्राथमिक उच्च विस्फोटक अपनी मारक क्षमता नहीं बल्कि अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण ज्यादा मूल्यवान समझे जाते हैं। वे मध्यम उच्च विस्फोटकों को जोड़ने वाली श्रृंखला को जलाने में काम आते हैं। वे डेटोनेटर में प्रयुक्त होते हैं।

प्राथमिक उच्च विस्फोटक पदार्थ (Primary High Explosive Substance)

वाणिज्य और मिलिट्री डेटोनेटर बनाने में प्राथमिक उच्च विस्फोटकों का प्रयोग होता है। वे जलते फ्यूज या ब्रिज तार जो विद्युत ब्लास्टिंग कैंप में होती है, द्वारा जल्दी जलाए जा सकते हैं।

डी डी एन पी (DDNP Diazodinitro phenol)

डी डी एन पी डेटोनेटर और प्राइमिंग संरचना में प्रयोग होती है।

मरकरी फल्मीनेट (Mercury Fulminate)

डेटोनेटर और प्राइमिंग संरचना में मरकरी फल्मीनेट के स्थान पर लेड आक्साइड तथा डी डी एन पी प्रयुक्त होता है।

लेड स्टेफनेट (Lead styphnate)

लेड स्टेफनेट प्राइमिंग संरचना में प्रयोग होता अन्य प्राथमिक उच्च विस्फोटकों की तुलना में यह कमजोर आरम्भ करने वाला है।

लेड एजाइड (Lead Azide)

लेड एजाइड डेटोनेटर तथा प्राइमिंग संरचनाओं में प्रयुक्त होता है।

माध्यमिक उच्च विस्फोटक (Secondary High Explosives)

ये कम संवेदनशील विस्फोटन के लिए मुख्य चार्ज या बूस्टर के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं। माध्यमिक उच्च विस्फोटक उष्मा, शॉक, रगड़ तथा स्टेटिक विद्युत के प्रति संवेदनशील नहीं होते फिर भी इनमें विभिन्न पदार्थों में अलग–अलग संवेदनशीलता होती है।

इनको प्राथमिक विस्फोटकों को डेटोनेट की मदद की ज़रूरत होती है। जब तक बूस्टर द्वारा प्राथमिक विस्फोटक पदार्थों को ज्वलन न करवाया जाए तब तक कुछ माध्यमिक

विस्फोटक डेटोनेट नहीं होते। अगर ठीक प्रकार इन्हें स्टोर किया जाए तब ये लम्बे समय तक के लिए प्रयोग करने योग्य (stable) रहते हैं।

माध्यमिक उच्च विस्फोटक पदार्थ (Secondary High Explosive substances)

माध्यमिक उच्च विस्फोटक पदार्थ वाणिज्य और सेना के प्रयोग के लिए उपलब्ध हैं।

सी–4 (C-4)

इसे प्लास्टिक विस्फोटक भी कहते हैं, सी–4 का रंग सफेद होता है जिसमें 91% RDX, 8% प्लास्टिसाइजर तथा 1% अन्य पदार्थ होते हैं। यह 8,064 मीटर (26,400 फीट) प्रति सैकंड की दर से फटता है।

सी–4 के कार्य विभिन्न है जिनमें निर्मित शेप्ड चार्ज में हैंड लोड होना शामिल है। स्थाई ठिकानों को बरबाद करने के लिए मिलिट्री आपरेशन में यह प्रयुक्त होता है।

डेटोनेटिंग कोर्ड (Detonating Cord (Det Cord))

डेटोनेटिंग कोर्ड का अमेरिकी मिलिट्री स्वरूप PETN की एक किस्म है जो पाउडर युक्त उच्च विस्फोटक है जिस का रंग सफेद और जिसका आवरण गहरे हरे रंग का प्लास्टिक होता है। अकसर मिलिट्री डेटोनेटिंग कोर्ड का गुलाबी रंग का RDX कोर होता है।

डेटोनेटिंग कोर्ड की गति इसके आकार और भरे हुए बिस्फोटक पर आधारित होती है। यह गति रंग 5,490 से 7,015 मीटर (18000 से 23000 फीट) प्रति सैकंड होती है।

डेटोनेटिंग कोर्ड कई विस्फोटों (charges) को एकत्र रूप से करने में प्रयुक्त होती है ताकि एक साथ डेटोनेशन हो, या उच्च विस्फोटक तक डेटोनेशन वेव (wave) पहुंचाती है जिससे बिना ब्लास्टिक कैप का प्रयोग किए उच्च विस्फोटन होता है। इसके उचित प्रयोग द्वारा पानी के अन्दर भी बिस्फोटन किया जा सकता है।

नोट :डेटोनेटिंग कोर्ड यू एस मिलिट्री टाइम फ्यूज से मिलती जुलती है। फर्क सिर्फ यह है

कि मिलिट्री टाईम फ्यूज में लम्बाई मापने के लिए पीले बैंड का प्रयोग होता है तथा टाइम फ्यूज का आंतरिक रंग काला अथवा भूरा होता है।

लचीला शीट विस्फोटक (Flexible sheet explosive)

फ्लेक्स एक्स (Flex-X)

लचीला शीट विस्फोटक कई मोटाइयों में बनता है तथा यह ओलिव ग्रीन रंग का होता है। इस में 63% पी ई टी एन PETN या RDX होता है, 8% नाइट्रोसेल्यूलोज तथा 29% जोड़ने वाला पदार्थ (binding material) होता है। यह विभिन्न गतियों पर धमाका करता है जो इस बात पर निर्भर करता है कि उच्च विस्फोटक कितनी मात्रा में विद्यमान है। इसे अमेरिकी फौजी भाषा में डेटाशीट–सी (Detasheet-C) कहते हैं।

डाटाशीट (Datasheet)

वाणिज्यिक डाटाशीट में 85% पी ई टी एन PETN तथा 15% जोड़ने वाला पदार्थ होता है जो इसे मिलिट्री डेटाशीट सी के मुकाबले ज्यादा ताकतबर विस्फोटक बनाता है। यह लाल रंग का होता है तथा 7686 मीटर (25,200 फुट) प्रति सैकंड की गति से विस्फोट करता है।

एच एम एक्स (होमोसाइकलोनाइट) HMX (Homocyclonite)

RDX बनाते समय उसका उप–उत्पाद (By Product) एच एम एक्स है। यह सभी विस्फोटकों से ताकतवर है।

नाइट्रोग्लीसरिन (Nitroglycerin)

नाइट्रोग्लीसरीन सीधा डायनामाइट का घटक है, यह एक तैलीय द्रव है जो साफ रंग से दूधिया रंग जैसा होता है। यह उष्मा, शॉक या रगड़ के प्रति संवेदनशील होता है। ज्यादा

गर्मी के संपर्क पर या रसायनिक क्रिया होने परयह विस्फोट कर सकता है।

पी ई टी एन (पेंटा अर्थराटाइट टेट्रा नाइट्रेट) (PETN (Penta Erythratite Tetra Nitrate) : PETN डेटानेटिंग कोर्ड, ब्लास्टिंग कैंप, बूस्टर तथा प्राइमिंग संरचनाओं में प्रयुक्त होता है। PETN 8300 मीटर (27200 फुट) प्रति सैकंड की गति से विस्फोट करता है।

आर डी एक्स **(RDX)** : RDX को साइक्लोनाइट भी कहते हैं, यह डेटोनेटिंग कोड के केन्द्र में प्रयुक्त होता है, और ब्लास्टिंग कैप में आधार चार्ज (base charge) का काम करता है। यह प्लास्टिसाइजर से मिलाकर तथा यू एस मिलिट्री प्लास्टिक विस्फोटकों में प्रयुक्त होता है। यह 8,810 मीटर (26800 फीट) प्रति सैकंड की दर से विस्फोट करता है।

टी एन टी (ट्राईनाइट्रोटोल्यून) TNT (Trinitrotoluene) : यह 6905 मीटर (22637 फीट) प्रति सैकंड की दर से फटता है। इसे आधार मानकर अन्य विस्फोटकों का वर्गीकरण करते हैं। यह अन्य पदार्थों के मिश्रण से विभिन्न प्रकार के विस्फोटक बनाने में काम आता है। उदाहरण के लिए कम्पोजीशन बी 39% TNT, 60% RDX तथा 1% wax का मिश्रण है।

यू एस मिलिट्री डायनामाइट (US Military Dynamite)

यह सीधा वाणिज्यिक डायनामाइट के 60% के समतुल्य होता है जिसमें RDX और TNT का मिश्रण होता है जो लगभग 6100 मीटर (20,000 फुट) प्रति सैकंड की गति से विस्फोट करता है। इस में नाइट्रोगिलसरीन नहीं होती और यह जमता या पिघलता नहीं है। यह पैराफिन लगे 3175 सेमी. × 30.32 सेमी (1¼ इंच × 8 इंच) कार्टरिज में पैक किया जाता है।

डायनामाइट (Dynamite)

इस का स्थान ज्यादा स्थाई तथा कम मूल्य वाले विस्फोटक पदार्थ ले रहे हैं। यह

गोली से आरंभ किया जा सकता है यदि पर्याप्त नाइट्रोग्लीसरीन विद्यमान हो। डिसेंसीटाइजर (Desensitizers) का प्रयोग करके अन्तिम उत्पाद को ज्यादा स्थाई बनाया जाता है। नाइट्रोग्लीसरीन 120 सेंटीग्रेड (540 फारनहाइट) पर जमती है। इस जमाव को रोकने के लिए EGDN (इथाइलीन ग्लाइकोल डाइनाइट्रेट) डाली जाती है।

यह कई आकार व प्रकारों में निर्मित किया जाता है। सीधा अमोनिया, जिलेटिन तथा अमोनिया–जिलेटिन।

'डायनामाइट के कार्टरिज के बाहर क्रिस्टिल आए तो यह साबित हो जाता है कि नाइट्रेट साल्ट रिस रहे हैं तथा जम गए है। इससे डायनामाइट प्रयोग के योग्य नहीं है।

ब्लास्टिंग एजेंट (Blasting Agents)

ये वे घटक है जिन्हें व्यक्तिगत तौर पर विस्फोटक नहीं कहा जा सकता। इन्हें बूस्टर की जरूरत होती है ताकि विस्फोटक गति को बरकरार रख सकें।

अमोनियम नाइट्रेट फ्यूल तेल (ANFO) मिश्रण

मुख्य साधारण बलस्टिंग एजेंट ANFO है जिसमें 94% प्रिलड अमोनियम नाइट्रेट तथा 6% फ्यूल तेल होता है। यह पदार्थ ब्लास्टिंग कैंप के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए इसमें अमोनियम नाइट्रेट कणों के साईज कम करने पड़ते हैं।

वाटर जैल या स्लरिज (Water Gel or sluries)

एक जैल को विस्फोटक या ब्लास्ट करने वाला पदार्थ वर्गीकृत किया जा सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि ब्लास्टिंग कैप द्वारा इस की ज्वलनता के प्रति कितनी संवेदनशीलता है। ये जैल डायनामाईट के कम संवेदनशील विकल्प के रूप में तैयार होते हैं। पानी 5% से 40% की मात्रा में हो सकता है। वाटर जैल को बुस्टर की ज़रूरत होती है। बाद में ये पदार्थ असवेंदनशील हो जाते हैं तथा विस्फोटक नहीं रहते।

बाइनरी (दो भाग) विस्फोटक (Binary (two part) explosive)

जब दोनों हिस्से मिलाये जाते हैं तभी बाइनरी (दो भाग) विस्फोटक ब्लास्टिंग कैंप के प्रति संवेदनशील बनते हैं। ये शॉक या रगड़ के प्रति संवेदनशील नहीं रहते। ये नाइट्रोमीथेन तथा अमोनियम नाइट्रेट से मिश्रित होते हैं तथा जब तक बन्द ट्यूब में इतनी नाइट्रोमीथेन रहती है जो अमोनियम नाइट्रेट को संवेदनशील कर सके तब तक ये विस्फोटक सक्रिय रहते हैं।

बूस्टर (Booster)

सामान्यतः पेंटोलाइट, पी ई टी एन या टी एन टी बूस्टर होते हैं। ब्लास्टिंग के लिए सहायक सामग्री **(Blasting Accessories)** है।

विस्फोटक के निर्माण व उसे चलाने के लिए जिन पदार्थ पर यंत्रों की जरूरत होती है वे इस में शामिल हैं–

- डेटोनेटर (ब्लास्टिंग कैंप) जो विद्युतीय और अविद्युतीय होती है
- सेफ्टी फ्यूज
- एन ओ एन ई एल NONEL शॉक ट्यूब इनीशियेटर
- मिलीसैकंड डिलेस (Delays)
- डेटोनेटिंग कॉर्ड (Detonating Cord)
- फ्यूज जलाने वाले
- रगड़ जलाने वाले
- परक्शन जलाने वाले (Percussion igniters)
- गर्म तार फ्यूज लाइटर
- इग्नीटर कोर्ड
- इम्प्रोवाइजिड इग्नीटर
- निम्न विस्फोटक इग्नीटर
- विद्युत स्किब (Squibs)

- क्रीम्पर्रस (Crimpers)
- फाइरिंग लाईन (लैड तार)
- ब्लास्टिंग मशीन
- कंडेन्सर डिस्चार्ज (सी डी) टाईप
- जनरेटर टाईप
- इम्प्रोवाइज़ड ब्लस्टिंग मशीनें
- गेलवेनोमीटर

विस्फोटक काम कैसे करता है। (How explosives work)

विस्फोटक पंक्ति (Explosive train)

आग जलाने के लिए आप लकड़ी के टुकड़े को सीधा माचिस नहीं दिखाते (यह जलेगा नहीं)। पहले आप कागज व अन्य छोटे टुकड़े जला कर छोटी आग जलाते हैं जो बड़े टुकड़े को जलाती है।

एक विस्फोटक पंक्ति विस्फोटक के लिए विस्फोटक पदार्थों का पंक्तिबद्ध समिश्रण है। सभी विस्फोटकों में यह बुनियादी प्रक्रिया है। इसमें ज्वलन के दो चरण होते हैं। जिनमें अन्तिम चरण विस्फोटक चार्ज का मुख्य चरण होता है।

डेटोनेटर (Detonater) : विस्फोटक पंक्ति में पहला चरण, डेटोनेटर में प्राथमिक उच्च विस्फोटक पदार्थ होता है।

बूस्टर (Booster) :जब मुख्य चार्ज मध्यम उच्च विस्फोटन का हो तब डेटोनेशन हासिल करने के लिए बूस्टर का प्रयोग किया जाता है।

मुख्य चार्ज (Main charge) : विस्फोटन श्रृंखला के अंतिम चरण में मुख्य चार्ज में मध्यम उच्च विस्फोटक होता है।

विस्फोटक पदार्थ को आरम्भ करना (Initiation of Explosives) :विस्फोटक शृंखला या विद्युतीय अथवा अविद्युतीय हो सकती है।

अविद्युतीय आरम्भ (Non electrical initiation)

फ्यूज (Fuse) : अविद्युतीय आरम्भिक विस्फोटकों में, फ्यूज पहला चरण है जिस के कारण विस्फोट होता है।

फ्यूज तुरंत जलने वाले पदार्थ का लम्बा सिरा होता है जिसे एक सिरे से जलाया जाता है जो आग को आगे बढ़ाते हुए दूसरे हिस्से पर विस्फोट करता है। फ्यूज कई प्रकार के होते हैं। प्रक्रिया शुरू करने के लिए थोड़े श्रम की जरूरत पड़ती है जैसे कि परकशन प्राइमर (Percussion Primer) आरम्भ करना, रगड़ इग्नाइटर, माचिस आदि।

अविद्युतीय ब्लास्टिंग कैप (Non electrical blasting caps)

ये उच्च विस्फोटकों में प्रयुक्त होते हैं। यह बुनियादी रूप से पतली एल्यूमीनियम, तांबा, या कांसे की ट्यूब होती है जो एक सिरे से खुली होती है ताकि इस में 0.635 सेमी (¼ इंच) टाईम फ्यूज डाला जा सके और जिसमें प्राथमिक और मध्यम क्वालिटी के उच्च विस्फोटक भरे हो। ऊष्मा, शॉक, रगड़ या स्टेटिक विद्युत के प्रति ये कैप बहुत संवेदनशील होती है।

ये उत्पाद पूरी तरह जल–अवरोधक की तरह प्रयुक्त होते हैं तथा मौके पर तुरंत अविद्युतीय फाइरिंग सिस्टम की तरफ प्रयुक्त हो सकते हैं।

शॉक ट्यूब फॉयरिंग सिस्टम (Shock Tube Firing System (NONEL)

शॉक ट्यूब फायरिंग सिस्टम में एक छोटी प्लास्टिक ट्यूब होती है जिस का व्यास 0.3175 सेमी (1/8 इंच) होता है जिस पर हल्की HMX तथा पतली एल्यूमीनियम की पर्त चढ़ी होती है। ट्यूब में 21,350 मीटर (70,000 फीट) प्रति एक पाउंड HMX प्रयुक्त किया जाता है। शॉक ट्यूब, विद्युतीय फायरिंग सिस्टम की बजाय स्टेटिक विद्युत (Static

electricity) से ज़यादा सुरक्षित होती है। यह सिस्टम विस्फोट पर सीधा नियंत्रण देता है जिसमें सुरक्षा का मार्जिन ज्यादा रहता है।

विद्युतीय आरम्भ **(Electrical initiation)**

विद्युतीय आरम्भिक विस्फोटन में, एक शक्ति स्रोत जैसे बैटरी सारी प्रक्रिया को शुरू करता है जिससे विस्फोट होता है।

विद्युतीय ब्लास्टिंग कैप **(Electrical blasting caps)**

विद्युतीय ब्लास्टिंग कैप उच्च विस्फोटकों की शुरुआत करते हैं। इनमें उच्च विस्फोटक पदार्थ कम मात्रा में होता है तथा मध्यम किस्म का विस्फोटक ज्यादा मात्रा में होता है। विद्युतीय ब्लस्टिंग कैप उसी विधि से बनाए जाते हैं जैसे अविद्युतीय कैप बनते है। फर्क यह है कि विद्युतीय कैप में बिजली का प्रयोग कैप में बिजली का प्रयोग कैप को हटाने में होता है।

बिजली का प्रवाह जो प्लास्टिक कोटिड लैड तारों द्वारा किया जाता है जिन्हें legwires भी कहते हैं। एक प्लग तार को स्थान पर जमाए रखता है। कैप के अन्दर एक छोटा व्यास क्षय वाली प्रतिरोधक (bridge wire) तार को जोड़ता है।

इन तारों को किसी ढंग से शॉर्ट किया जाता है ताकि रेडियो तरंगों या स्टेटिक बिजली से दुर्धनावश विस्फोट न हो जाए। जब विद्युत प्रवाहित होती है ब्रिज वायर गर्म होती है, इग्नीशन चार्ज को जलाती है तथा कैप के अन्दर अतिरिक्त चार्ज उत्पन्न करती है। विशेष कार्य करने के लिए कुछ कैप में विलम्ब बनाए जाते हैं ये विलम्ब कुछ मिली सैकंड से शुरु होकर 12 सैंकड के होते हैं।

इलेक्ट्रिक ब्लास्टिंग कैप विभिन्न चार्जों के तुरंत विस्फोटन के लिए जोड़े जा सकते हैं।

तात्कालिक विस्फोटक यंत्र (आई0 ई0 डी0)

इस अनुभाग में तात्कालिक विस्फोट यंत्रों के उद्देश्य, बनावट, हिस्से, रचना, कार्य प्रणाली और प्रभाव इत्यादि की सामान्य जानकारी दी गई है। बंब विस्फोट घटना की ठीक जांच करने के लिए, जांच कर्ता की आई0 ई0 डी0 के हिस्सों और इसकी आंतरिक कार्य प्रणाली की पृष्ठभूमि का ठोस ज्ञान होना चाहिए ताकि ऐसे यंत्र का पुननिर्माण संभव हो सके। यद्यपि विस्फोट के बाद यंत्र में बदलाव आ जाता है लेकिन इसके हिस्से अलग नहीं होते हैं। विस्तृत जांच से ऐसे महत्वपूर्ण सुराग/साक्ष्य मिल सकते हैं जिससे यंत्र का पुनर्निर्माण किया जा सकता है और परिणामस्वरूप इसे बनाने वाले की पहचान हो सकती है तथा उसे हिरासत में लिया जा सकता है।

उद्देश्यः

इस अनुभाग के पूरा होने पर आप निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगे–

- विभिन्न तात्कालिक विस्फोट यंत्रों की बनावट का वर्णन करना।
- विभिन्न यंत्रों की कार्य प्रणाली की जानकारी देना।
- आई0 ई0 डी0 के तात्कालिक विस्फोटक मिश्रण और तात्कालिक प्रस्फोटक (Detonators) के हिस्सों की पहचान करना।

तात्कालिक विस्फोट यंत्रों का परिचय–

तात्कालिक विस्फोटक यंत्र भी एक बम ही होता है। यह ऐसी सामग्री से बनाया जाता है जो निश्चित तौर पर बम के हिस्से बनाने के लिए नहीं होती है जैसे कि इलैक्ट्रोनिक सर्किट, बोतलें, चीनी तथा ऐसा घरेलू सामान इत्यादि, लेकिन इसे आई0 ई0 डी0 के हिस्से के तौर पर उपयोग में लाया जाता है।

आई0 ई0 डी0 के उदाहरण

यह लगभग सभी आंतकवादी संगठनों की पसंद का हथियार है। इनके निर्माण और प्रयोग की सीमा केवल आंतकवादियों की सृजन क्षमता ही है। जिन लक्ष्यों पर आई0 ई0 डी0 का प्रयोग किया जाता है वे भी इनकी तरह ही अलग–अलग प्रकार के होते हैं। आई0 ई0 डी0 से पूर्व में हुई विस्फोट घटनाओं के कुछ चुनिंदा उदाहरण इस प्रकार हैः–

- 1989 में डयूट्स बैंक के चेयरमैन अल्फ्रेड की उस समय हत्या हो गई जब सड़क के किनारे रखा 41 पांऊड टी0 एन0 टी0 का बंब उनकी कार के पिछले दरवाज़े के पास फट गया।

- 1989 में स्कॉटलैंड में पैन एम0 की 103 उड़ान के सामान में रखा बंब फट गया इसमें सभी यात्री मारे गए।

- 1991 में लेबनॉन के बेरूत शहर में अमेरिकन विश्वविद्यालय में एक कार बंम का प्रस्फोटन हुआ।

- 1992 में पेरोबियन मेरिन्स् के बच्चों को ले जा रही स्कूल बस पर सड़क किनारे रखे एक बंब का प्रयोग किया गया।

- 1992 में आमेर्निया और जार्जिया के बीच एक पुल को गाड़ी बंब द्वारा उड़ा दिया गया।

- 1992 में जर्मनी के म्युनिच शहर में डयूट्स बैंक की एक शाखा के बाहर आई0 ई0 डी0 का विस्फोट हुआ।

- 1992 में जापान के टोक्यो शहर में शिक्षा मंत्री के कार्यालय के बाहर आई0 ई0 डी0 का विस्फोट हुआ।

- 1993 में पेरू में कोका–कोला सयंत्र के बाहर, आई0 बी0 एम0 मुख्यालय भवन, चील

के दूतावास, अमेरिकी दूतावास, अमेरिका–पेरूबियन द्विराष्ट्र केंद्र और अंतराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर कार बंब विस्फोट हुए।

- 1994 में पेरू के लीमा शहर में अमेरिकी दूतावास के पीछे एक गाड़ी बंब विस्फोट हुआ।

- 1994 में अर्जेटीना के ब्यूनिस आइरस शहर में एक ट्रक बंब के फटने से यहूदी सामुदायिक केंद्र नष्ट हो गया।

- मध्य पूर्व शांति प्रक्रिया के विरोध में, 1994–95 में हमास ने इजराइल और अधिकृत क्षेत्र में कई कार बंब घटनाओं की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली।

नीचे ऐसे केंद्रों की सूची दी गई है जो आतंकवादी अथवा आपराधिक गतिविधियों के कारण बंब घटनाओं के लक्ष्य बने।

- बेरूत, लेबनॉन में अमेरिकी दूतावास।
- बेरूत, लेबनॉन में अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पर अमेरिकी मैरिन।
- बोगोटा, कोलंबिया में कोलंबियन डी0 ए0 एस0 हेडकवार्टर।
- लॉस वेगास, नेवदा में हारवेस होटल और कैसिनो।
- न्यूयार्क में विश्व व्यापार केंद्र।

- न्यूयार्क शहर में संयुक्त राष्ट्र भवन, हालैंड सुरंग और अन्य महत्वपूर्ण स्थल।
- ओकलहनोमा शहर में अमेरिकी फेडरल भवन।

यदि पिछले कई वर्षों की आतंकवादी घटनाओं का विश्लेषण किया जाए तो इस बात की पुष्टि होती है कि अभी भी ऐसे बंब उनकी पसंद का हथियार है। इनके आकार और मारक क्षमता में निरंतर वृद्धि हो रही है। पिछले वर्षों में, गाड़ी बंब सबसे पसंदीदा हथियार रहा है। इससे जान–माल की बहुत हानि हुई और लगभग हर हफ्ते ऐसे विस्फोट सुर्खियों में थे। मानवीय परेशानियों में वृद्धि करते हुए, आतंकवादियों ने हाथ से रखे जाने वाले, हाथ से फैंके जाने वाले

और हाथ से तैयार किए गए तथा डाक सेवाओं द्वारा भेजे गए बंबों से लोगों को अपना निशाना बनाया।

आई0 ई0 डी0 की श्रेणियाँ

अनुभाग–4 में शामिल श्रेणियों के अतिरिक्त, फ्यूज़िग प्रणाली और विस्फोटक के प्रकार तथा इसमें पाई जाने वाली सामग्री के आधार पर भी आई0 ई0 डी0 को अलग–अलग श्रेणियों में बांटा जाता है।

फ्यूज़िग प्रणाली को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है–

- मैकेनिकल ;
- इलैक्ट्रिकल ;
- कैमिकल ;
- ऊपरलिखित में से किन्ही दो अथवा तीनों का मेल

मैकेनिकल/गैर इलैक्ट्रिकल आई0 ई0 डी–

इस प्रकार के आई0 ई0 डी0 के हिस्से आसानी से प्राप्त हो जाते हैं जिससे बंब बनाने वाले इनकी ओर आकर्षित होते हैं। कभी–कभी यह भी संभव होता है कि घटना स्थल पर उपलब्ध हिस्सों को ही विस्फोट के लिए प्रयुक्त कर लिया जाता है, जैसे कि स्टीम बॉयलर के निकास को बंद कर ताकि जब पानी को गर्म करने के लिए इसे गर्म किया जाए तो भाप बनने से इस पर अतिरिक्त दवाब बन जाए। दबाव बढ़ने से इसका ढाँचा इसे सह नहीं पाएगा जिससे बॉयलर से विस्फोट हो जाएगा।

मैकेनिकल यंत्र वह होता है जिसमें कोई बिजली का सर्किट नहीं होता है और बिना बिजली की तकनीक से इस पर कार्य किया जा सकता है। गैर–विद्युत मशीनी यंत्रों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं :

- मशीनी समय–यंत्र
- बर्फ पिघलने से देरी

- भाप का दबाव
- भौतिक दबाव अथवा सामग्री का दबाव
- धकेलने की कार्रवाई
- खींचने की कार्रवाई
- दबाव
- दबाव को हटाना
- तनाव/खिंचाव को हटाना
- तरंगे उत्पन्न करना

इन आई0 ई0 डी0 में प्रयुक्त ज्वलन प्रणाली एक टाईम फ्यूज़, सेफ्टी फ्यूज़ अथवा एक शॉक ट्यूब को गैर–विद्युत ब्लास्टिंग गैप या डैटोनेटर में डालने से तैयार की गई होती है।

इलैक्ट्रिकल (विद्युत) आई0 ई0 डी0

बिजली से चलने वाले आई0 ई0 डी0 बहुत से बंब बनाने वालों को आकर्षित करते हैं क्योंकि इनसे विविध प्रकार के डिजाइन बनाने की संभावना होती है, जिससे बंब की क्षमता और उपयोग में वृद्धि हो जाती है। लेकिन इस प्रकार के आई0 ई0 डी0 को तैयार करने के लिए काफी उच्च तकनीक और निपुणता की आवश्यकता होती है।

विद्युत यंत्र

विद्युत यंत्र में एक विद्युत सर्किट होता है जिससे विद्युत तरंगे निकलती हैं जो उसमें कई तरह के कार्य करते हुए डैटोनेटर को सक्रिय करती हैं, जिससे विस्फोट होता है। साधारण तौर पर उर्जा स्त्रोत से ब्लास्टिंग कैप में विस्फोट प्रक्रिया आरंभ होती है जिससे मुख्य विस्फोटक फट जाता है।

स्विच

विद्युत आई0 ई0 डी हिस्सों में कुछ बहुत ही आधारभूत चीजें होती हैं जैसे कि तार और

एक उर्जा स्त्रोत (सामान्यतः बैटरी)। आई0 ई0 डी0 के एक भाग को दूसरे से जोड़ने के लिए स्विच मुख्य हिस्सा होता है। व्यापारिक तौर पर उपलब्ध निम्नलिखित प्रकार के स्विच इनमें शामिल हो सकते हैं:

इलैक्ट्रोमैकेनिकल स्विच (विद्युत मशीनी स्विच)

- चाकू स्विच
- बहु संपर्क स्विच
- पुश बटन स्विच
- रोटरी स्विच
- मर्करी स्विच ;
- रॉकर स्विच
- लीवर स्विच
- स्लाइड स्विच

मैगनेटो इलैक्ट्रीक स्विच (चुंबकीय विद्युत स्विच)

- रिले
- रीड़
- सोलोनोएड ;
- सर्वोस्लाइड

स्विच के तौर पर प्रयुक्त अन्य विद्युत उपकरण

- ट्रॉजिस्टर
- थाईरिस्टीरस

- ✍ डियोडस
- ✍ इन्टैगरेटड सर्कट
- ✍ इलैक्ट्रोनिक टाइमर
- ✍ डिजटिल वॉच टाइमर
- ✍ फोटो इलैक्ट्रिकल सैल
- ✍ ईसैल
- ✍ रजिस्टर/कैपैसीटर टाइमर
- ✍ रेडियो फ्रीक्वैन्सी (आर0 एफ0) ट्रांस्मीटर एवं रसीवर
- ✍ हार्ड वाइर रिमोट कंट्रोल
- ✍ इनफ्रेरड उपकरण (आई0 आर0)
- ✍ प्रौक्सीमिटी मैक्नेमिजम

आई0 ई0 डी0 का डिजाइन और निर्माण

आई0 ई0 डी के डिजाइन और निर्माण में निम्नलिखित बात महत्वपूर्ण होती हैं:

- बंब बनाने वाले की कल्पना और सृजनशीलता

उपकरण बनाने में आने वाली कुछ कठिनाइयाँ अथवा परेशानियाँ

- ✍ उपकरण लाने ले जाने के दौरान सुरक्षा
- ✍ पुर्जे प्राप्त करना
- ✍ पुर्जों की मजबूती
- ✍ उपकरण की क्षमता को छुपाना
- ✍ बंब फेंकने वाले का लक्ष्य

आई0 ई0 डी प्रवर्तित प्रणाली **(I. E. D. initiation System)**

खींचने वाले उपकरण **(Pull Devices):**

इनमें निम्नलिखित अथवा इनके अतिरिक्त भी कुछ अन्य उपकरण शामिल हो सकते हैं:

- ✍ घर्षण के प्रति संवेदनशील मिश्रण को प्रवर्तित करने के लिए किसी तार को खींचना।
- ✍ दो विद्युत सम्पर्कों के बीच से किसी कुचालक (Insulator)को हटाना।
- ✍ विस्फोट हेतु कॉकर स्ट्राइकर छोड़ने के लिए पिन को निकालना।

दबाव उपकरण : **(Pressure Devices)**

दबाव उपकरणों में निम्नलिखित अथवा इनके अतिरिक्त भी कुछ उपकरण हो सकते हैं:

- ✍ रासायनिक मिश्रण को प्रवर्तित करने के लिए आवश्यक घर्षण उत्पन्न करने हेतु समुचित दबाव डालना।
- ✍ दो विद्युत संपर्कों को नज़दीक करने के लिए समुचित दबाव डालना
- ✍ विस्फोट के लिए कॉक स्ट्राइकर को छोड़ने हेतु समुचित दबाव डालना

दबाव कम करने वाले उपकरण: **(Pressure Release Devices)**

दबाव कम करने वाले उपकरणों में निम्नलिखित अथवा इनके अतिरिक्त कोई अन्य उपकरण भी हो सकते हैं :

- ✍ विस्फोट के लिए स्प्रिंग के ऊपर रखे स्ट्राइकर को छोड़ने के लिए रखे गए भार को हटाना।
- ✍ दो विद्युत संपर्कों को नज़दीक करने के लिए समुचित भार को हटाना।

तनाव कम करने वाले उपकरण : **(Tension Release Devices)**

इनमें निम्नलिखित अथवा अन्य कोई उपकरण शामिल हो सकते हैं :

विस्फोट के लिए किसी तार को काटना अथवा किसी ऐसे मशीनी उपकरण को हटाना जिससे स्प्रिंग पर रखा स्ट्राइकर छूट जाए।

एन्टी डिस्टरबेन्स उपकरण **(Anti Disturbance Devices)-**

एन्टी डिस्टरबेन्स उपकरणों में ऐसे सेंसर हो सकते हैं जो या तो उपकरण को डेटोनेट कर सकते हैं या उपकरण को पूर्वनिश्चित समय तक ही कार्य करने देते हैं अथवा निम्नलिखित द्वारा ट्रिगिरड किए जाते हैं–

- ✍ कंपन
- ✍ गतिविधि
- ✍ तापमान
- ✍ प्रकाश
- ✍ कैपेसिटैन्स्
- ✍ इन्डक्टैन्स्
- ✍ चुंबकीय आकर्षण अथवा तनाव
- ✍ ध्वनि
- ✍ एक्स–रे

आई0 ई0 डी0 की डिलवरी

जैसा कि पहले बताया गया है, आई0 ई0 डी कई तरह से डिलीवर किए जा सकते हैं, जैसे कि,

- ✍ हाथ द्वारा फेंके अथवा रखे जा सकते हैं।
- ✍ राकेट, मॉर्टर, कैटापल्ट द्वारा गिराए जा सकते हैं।
- ✍ अज्ञात वाहक द्वारा पहुंचाए जा सकते हैं, जैसे –

- डाक सेवा
- कूरियर
- भूतल डिलवरी प्रणाली (फैडरल एक्सप्रैस, डी0 एच0 एल0, यू0 पी0 एस0 इत्यादि)
- स्थानीय डिलीवरी सेवाएं (फूल, रिटेलस्टोर डिलीवरी)
- मित्र, संबंधी अथवा जान–पहचान वाले।

उदाहरण :

16 अप्रैल, 1986 को एक जवान गर्भवती आयरिस महिला लंदन के हीथरो एयरपोर्ट पर ई0 एल0 ए0 एल0 (elal) फ्लाइट से तेल–अवीब जाने की तैयारी कर रही थी। उसके बैगों की एक्सरे जांच हो चुकी थी परन्तु इजराइली सुरक्षा कर्मचारी उसे जहाज़ पर चढ़ने की अनुमति देने से पहले उससे निरन्तर पूछताछ करते रहे क्योंकि उसके उत्तर उन्हें ठीक नहीं लग रहे थे। उसके फिलीस्तीनी मंगेतर ने उसे एक बैग दिया था। इन कर्मचारियों ने इस बैग को मेज पर उल्टा दिया। बैग के अन्दर सबसे नीचे उन्हें लगभग तीन पाऊंड सैमटैक्स मिला। पैन–ऐम की 103 उड़ान में विस्फोट करने के लिए जितनी मात्रा में विस्फोटक का प्रयोग किया गया था, यह विस्फोटक लगभग उससे तीन गुना था।

हस्ताक्षर

उपकरणों, पुर्जों अथवा बंबों को निश्चित स्थान तक पहुंचाने के तरीकों की, बंब विस्फोट करने वालों की अपनी–अपनी निजी पंसद होती है। वे उसी चीज़ का सहारा लेते है, जो उनके लिए काम की सिद्ध हो सकती है। विस्फोट के बाद जांच करने वाले अनुभवी जांचकर्ता, बंब फैंकने वालों के तरीकों का अध्ययन करने की कोशिश करते हैं। कौन लोग किस तरह का बंब तैयार करते हैं, इसे उनके हस्ताक्षर कहा जाता है।

बम्ब घटनास्थल की जांच प्रक्रिया

इस अनुभाग में बम्ब विस्फोट की एक घटना की बारीकी से जांच के लिए आवश्यक कार्मिकों के कर्तव्यों में एवं जिम्मेदारियों की व्याख्या की गई है। इस पाठ में शामिल सामग्री के लिए यह अनुभाग कार्य सहायक संदर्भ के रूप में प्रयोग के लिए भी है।

उद्देश्य

इस अनुभाग को पूरा करने पर आप निम्नलिखित कार्यो को करने में सक्षम होने चाहिए।

- बम्ब घटना स्थल प्रबंधन के लिए आवश्यक कार्मिकों की टीम का चयन करना।
- उक्त कार्मिकों के कर्तव्य और दायित्व निर्धारित करना।

बम्ब घटनास्थल की जांच

बम्ब फटने की किसी घटना की प्रभावी और कुशल जांच के प्रबंधन हेतु, बम्ब घटनास्थल की जांच करने वाली टीम के कर्तव्यों को पहले से ही निश्चित करके उन्हें सौंप देना चाहिए। जब उनके कत्वर्य निश्चित कर लिए जाएं तो विशिष्ट कर्तव्यों और सौंपे गए दायित्वों को एक मानक आप्रेटिंग प्रक्रिया के तौर पर लिपिबद्ध कर लेना चाहिए।

व्यापक आप्रेटिंग प्रक्रियाएं (SOP) इसलिए आवश्यक हैं ताकि बम्ब घटना की जांच के सभी कार्य पूरे किए जाए और किसी भी बात की अनदेखी न हो। यदि सभी कार्य पूरे कर लिए जाते हैं तो संदिग्ध व्यक्ति की पहचान होने की ज्यादा संभावना है। डाकूमैंटेशन से यह स्पष्ट हो जाता है कि टीम के प्रत्येक सदस्य को क्या कार्य करना है।

बम्ब घटनास्थल जांच टीम

टीम लीडर

- अपराध घटना स्थल पर प्रवेश तकनीक का उपयोग।
- घटनास्थल पर बाधाओं/खतरों की जांच और यह निश्चित करना कि सुरक्षा दल की आवश्यकता है या नहीं।
- क्षेत्र को सुरक्षित बनाना।
- कार्मिकों का चुनाव और उन्हें एकत्रित करना।
- उपस्कर/साज सामान का चुनाव और उन्हें एकत्रित करना।
- उपयुक्त साज–सामान के साथ कमांड केन्द्र स्थापित करना।
- कार्मिकों की जिम्मेदारी तय करना घटनास्थल पर।
- घटनास्थल पर अन्य व्यक्तियों/ऐजेंसियों के साथ गतिविधियों का समन्वय।
- सम्मेलन आयोजित करना और संग्राहित साक्ष्यों का मूल्यांकन।

सुरक्षा

- परिधि क्षेत्र की सुरक्षा।
- छतों और अन्य उपयोगी बिन्दुओं की सुरक्षा।

फोटोग्राफर

- उपस्करों/साज–सामान (Equipment) का चयन और उन्हें एकत्रित करना
- एक फोटो लॉग तैयार करना।

- फोटोग्राफ की एक तर्कसंगत और व्यवस्थित श्रृंखला तैयार करना।
- ब्लास्ट केन्द्र और उससे हुए नुकसान की दूरी/नाप के फोटोग्राफ लेना।
- इससे आगे के सामान्य क्षेत्र के फोटोग्राफ लेना। यदि संभव हो तो हवाई

फोटोग्राफ भी लेना।

- जांच के उद्देश्य से सामान्य क्षेत्र में गाड़ियों और भीड़ के फोटोग्राफ लेना
- कंपोजिट इन्वैंटरी में दिए साक्ष्यों के फोटोग्राफ लेना।
- ब्लूप्रिंट के फोटोग्राफ लेना।
- प्रैस, टी.वी. कवरेज इत्यादि सहित क्षेत्र की और ढ़ांचे के पहले लिए गए फोटोग्राफ सहित नक्से इकट्ठे करना।
- दृश्य के पुनर्निमाण की श्रृंखला के फोटोग्राफ लेना।
- टीम लीडर और साक्ष्य तकनीशनों में समन्वय करना।

<u>भौतिक साक्ष्य और डिस्कवरी सर्च टीम</u>

- सैकेंडरी परिधि से आंतरिक परिधि तक सामान्य क्षेत्र की तलाशी।
- साक्ष्य ढूंढने के लिए तलाशी के तरीकों का निश्चय करना।
- किट्टस जोड़ना।
- विस्फोट से विखंडित टुकड़ों व मिसाइल से हुए नुकसान के लिए आसपास के सभी भवन, गाड़ियों और अन्य वस्तुओं की जांच और इन स्थानों को फोटोग्राफर और स्क्रैमैटिक आर्टिस्ट के लिए चिह्नित करना।
- साक्ष्य की बाहरी परिधि को निश्चित करना और इसे फोटोग्राफर तथा स्कीमैटिक आर्टिस्ट के लिए इंगित करना।

- सर्च करने की बाहरी परिधि को विस्फोट की जगह तक नापना।
- विस्फोट से साक्ष्यों के लिए क्षेत्र की तलाशी, फोटोग्राफर, स्कीमैटिक आर्टिस्ट, और साक्ष्य तकनीशियन के साथ मिलाकर प्रत्येक साक्ष्य की रिकार्डिंग और पैकेजिंग।
- पैरों के निशान, थकान ट्रैक, फटे कपड़े, खून, बाल और रेशें, अंगुलियों के निशान और अपराधी से जुड़े अन्य किसी अतिरिक्त साक्ष्य के लिए प्रवेश और

निकासी क्षेत्रों की तलाशी।

- छतों, वृक्षों अथवा अन्य ऐसे ऊंची जगहों की तलाशी जहां पर विस्फोट का मलवा गिरा हो सकता है।
- यदि संभव हो तो सामान्य क्षेत्र की घटना के लिए पुननिर्माण।
- टीम लीडर और अन्य जांच कर्ताओं के साथ समन्वय।

विस्फोट केन्द्र की टीम

- आंतरिक परिधि की तलाशी।
- स्फिटर स्क्रीनों को ठीक रखने सहित उपस्करों का चयन और उन्हें एकत्रित करना।
- बाधाओं से सचेत रहना।
- विस्फोट के केन्द्र को ढूंढ़ना।
- विस्फोट के एकदम आसपास के क्षेत्र और गड्ढे से छेड़छाड़ करने से पहले स्कीमैटिक आर्टिस्ट और फोटोग्राफर के साथ समन्वय।
- गढ्ढे या नुकसान का आकार, गहराई और शक्ल का माप और रिकार्ड करना।विस्फोट की जगह से नमूने इकट्ठे करना और आवश्यक मुख्य नमूने अपने पास रखना।

- विस्फोट के स्थान की तलाशी, विश्लेषण और सामान्य क्षेत्र तलाशी यूनिट तक अतिरिक्त क्षेत्र की छानबीन।
- सभी साक्ष्यों को एक–एक करके रिकार्ड करना।
- फोटोग्राफर स्कीमैटिक आर्टिस्क और साक्ष्य तकनीशियन की सामान्य प्रक्रिया से मिलान करके पाए गये साक्ष्यों का पैकेज।
- यदि संभव हो तो घटना स्थल के निकटतम क्षेत्र के घटनाक्रम का पुर्ननिर्माण।

- टीम लीडर के साथ समन्वय।

<u>साक्ष्य तकनीशियन / अभिरक्षक (कस्टोडियन)</u>

- साक्ष्य एकत्रित करने के साज सामान का चयन।
- साक्ष्य लॉग तैयार करना और स्कीमैटिक आर्टिस्ट के साक्ष्य नियंत्रण स्कैच और फोटोग्राफ के साथ इसका मिलान।
- सभी साक्ष्यों का संग्रहण, उन्हें मार्क करना और पैकेज करना ताकि ठीक ढंग से पहचान हो सके।
- जब संभव हो तो साक्ष्यों को अलग–अलग करना और इन्हें श्रेणियों में बांटना।
- घटनास्थल पर एकत्रित किए गये सभी साक्ष्यों का नियंत्रण और कस्टडी लेना।
- प्रयोगशाला ले जाने के लिए एकत्रित साक्ष्यों को तैयार करना और संमिश्रण करना।
- प्रयोगशाला विश्लेषण के लिए विस्तृत अनुरोधों सहित हस्तांतरण पत्र तैयार करना।
- विस्फोट दृश्यों के फोटोग्राफ और स्कैचों की प्रतियों सहित साक्ष्यों का प्रयोगशाला को उचित स्थानांतरण।
- प्रयोगशाला की सभी रिपोर्टो को प्राप्त करना और उनकी समीक्षा करना।
- टीम लीडर और अन्य जांचकर्ताओं के साथ तालमेल।

स्कीमैटिक आर्टिस्ट

- साज सामान का चयन और उसे एकत्रित करना।
- विस्फोट के निकटतम क्षेत्र का रेखाचित्र बनाना।
- सामान्य क्षेत्र का रेखाचित्र बनाना।
- जिस स्थान से साक्ष्य पाया गया उसे दिखाने के लिए, पहचान हेतु अंक और शब्दो को साक्ष्य नियंत्रण स्कैच पर दिखा कर पाए गये साक्ष्य की पहचान करना।
- साक्ष्य तकनीशियन के साथ इसका मिलान करना।
- ऊंचाई, लंबाई और चौड़ाई का आवश्यक माप तैयार करके उसे दिखाना।
- विस्फोट के केन्द्र से पाए गये साक्ष्य की हर मद तक की दूरी को मापना।
- साक्ष्य तकनीशियन के साथ मिलकर एकत्रित किए गये साक्ष्यों का ब्यौरा तैयार करना।
- यह सुनिश्चित करना कि सभी साक्ष्यों को कंट्रोल स्कैच पर नोट कर लिया गया है।
- न्यायालय में ठीक ढंग से प्रस्तुती के लिए साक्ष्य, कंट्रोल स्कैच और अन्य रेखाचित्रों की पहचान करना और चिह्नित करना।
- रेखाचित्र पर एक काल्पनिक कहानी तैयार करना।
- विस्फोट के गवाहों की मदद से कलाकार की सोच के अनुसार विस्फोट के पहले का दृश्य तैयार करना।
- टीम लीडर और अन्य जांचकर्ताओं के साथ तालमेल करना।

फिंगरप्रिंट विशेषज्ञ

घटनास्थल पर पाए गए सभी और अस्पष्ट अंगुलियों के निशानों की पूरी तरह से

जांच–परख करना।

प्रयोगशाला कैमिस्ट (यदि संभव हो तो)

- विस्फोटक तकनीशियन और अन्य विशिष्ट साक्ष्य संग्रहण प्रयासों में सहायता करना।
- विशेष चीजों को इकट्ठा करने में सहायता देने और परामर्श के लिए उपलब्ध रहना।
- यह सुनिश्चित करना कि साक्ष्यों का संग्रहण इस प्रकार किया जाए ताकि प्रयोगशाला में उनका उचित ढंग से रासायनिक विश्लेषण हो सके।

सामान्य क्षेत्र जांच टीम

निम्नलिखित सहित साज–सामान का चयन और असैम्बल करना।

- कैमरा
- फिंगरप्रिंट किट
- सामान्य संसाधन सहायक जैसे कि किसी संदिग्ध के हाथ साफ करने के कपड़े और कपड़ों के प्लास्टिक बैग।
- प्रवेश और निर्गम के रास्तों का मूल्यांकन तथा रिब्यू मैप बनाना।
- क्षेत्र का चित्र बनाने के लिएएक व्यवस्थित तरीका चुनना।
- गवाहों के लिए आस–पड़ोस का चित्रपट तैयार करना।
- ऐसे सभी व्यावसायिक स्थलों का चित्रपट तैयार करना जो अपराधी के आने और जाने से संबधित हो सकते हैं जैसे कि पूरी रात खुले रहने वाले सेवा केंद्र, कैफे, टोल–टैक्स वाले इत्यादि।
- ऐसे व्यक्तियों का निश्चय करना जो विस्फोट के समय उस क्षेत्र में हो सकते हैं, जैसे :
- सामान पहुंचाने वाले व्यक्ति
- डाक वाहक

- समाचार पत्र देने वाले व्यक्ति
- विक्रेता
- आगे की अनुवर्ती जांच के लिए ब्यौरा रिकार्ड करे,
- संदिग्ध व्यक्ति
- संदिग्ध गाड़ियां
- संदिग्ध परिसर
- जांच से संबंधित आवश्यक तथ्यों के साथ, संदिग्ध व्यक्तियों की सूची तैयार करना।

यदि यह निश्चित हो जाए कि विस्फोट का एक आपराधिक कार्य होनें का संदेह है, तो सामान्य आपराधिक जांच प्रक्रिया का पालन किया जाए।

विशेषतया:

- विस्फोट से संबधित कच्चे माल के स्रोत की जांच करना।
- टीम लीडर के साथ संपर्क बनाकर रखना।
- दृश्य के अनुसार अपनी जिम्मेदारियों का पालन।
- ऐसी सभी स्थितियों के समग्र मूल्यांकन में सहायता करना।
- अन्य जांचकर्ताओं के साथ समन्वय करना।

निकटतम क्षेत्र जांच दल

निकटतम क्षेत्र जांच दल के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों में निम्नलिखित शामिल है, परन्तु ये अंतिम नहीं है:

- दृश्य स्थल पर शिकार हुए सभी लोगों को ढूंढना एवं उनकी पहचान करना।
- निम्नलिखित सहित दृश्य पर सभी गवाहों की पहचान करना और उन्हें ढूंढना:

- स्थानीय अधिकारी,
- आग बुझाने वाले बचाव और चिकित्सा कार्मिक।
- दृश्य स्थल पर लोगों के साक्षात्कार लेना और ऐसे व्यक्तियों की पहचान करना जिनका बाद में साक्षात्कार लिया जाना हो।
- संपति के मालिक की पहचान करना और निम्नलिखित सहित ऐसे व्यक्तियों की पहचान करना जो सामान्यतः परिसर में रहते हैं:
- कर्मचारी
- चौकीदार
- द्वारपाल इत्यादि।
- ऐसे सभी व्यक्तियों अथवा समूहों और स्थानों के नाम उपलब्ध कराना, जिनके सामान्य क्षेत्र जांच दल द्वारा साक्षात्कार लिए जाने हों। इनमें वे घायल लोग भी हो सकते हैं जिन्हें चिकित्सा के लिए घटना स्थल से हटाया गया हो।
- गवाहों द्वारा दिए ब्यौरे को रिकार्ड करना। महत्वपूर्ण सूचना में निम्नलिखित शामिल है:
- विस्फोट का समय,
- आवाज,
- धुएं का रंग,
- अन्य गंध।

- विस्फोट से पूर्व दृश्य स्थल पर सामान्य गतिविधियों के बारे में तथ्य निश्चित करके उन्हें रिकार्ड करना।
- पैकेज
- बस्तुएं

- सामान
- डिब्बे
- व्यक्ति
- गाड़ियां
- यदि संभव हो तो निकटतम क्षेत्र की गतिविधियों के घटनाक्रम का पुर्ननिर्माण करें।
- टीम लीडर और अन्य जांचकर्ताओं के साथ ताल–मेल करना।

संचार संपर्क

संचार संपर्क प्रतिनिधि के निम्नलिखित कार्य और जिम्मेदारियॉ हैः

- अन्यों के साथ संपर्क के तौर पर कार्य करना।
  - यूनिट
  - विभाग
  - एजैन्सियां
  - संगठन
- अपने निजी संपर्कों से विश्वास के महत्वपूर्ण कारकों को विकसित करना।
- संचार के आवश्यक साधनों और माध्यमों को प्राप्त करना।

मीडिया संबंध

मीडिया संबंध प्रतिनिधि के कार्य और दायित्व इस प्रकार हैंः–

- मीडिया और जांच दल के बीच मध्यस्थ का कार्य करना।
- सूचना को प्राधिकृत तौर पर जारी करने के लिए मार्गनिर्देश स्थापित करना।
- हमेशा यह याद रहे कि मीडिया को गलत सूचना देने की बजाए, कोई भी सूचना न देना ज्यादा ठीक है।

- जब किसी मीडिया यूनिट को यह ज्ञात हो जाता है कि उसे किसी उद्देश्य से गलत अथवा भ्रामक सूचना दी गई है तो इससे पहले चाहे उनके साथ कितने भी मधुर संबंध और अच्छा संपर्क क्यों न रहा हो, वह एकदम नष्ट हो जाएगा। (यह बात मीडिया के बैध व्यावसायिक और विश्वस्त सदस्यों के बारे में की गई है)
- यह जानने का प्रयास करो कि तुम किससे बात कर रहे हो।
- सिद्धांत–विहीन लोगों से दूरी बनाकर रखें।
- जन सूचना अधिकारी के माध्यम से सूचना जारी करने के लिए एक स्पष्ट माध्यम बनाओ।
- यह अच्छी तरह से निश्चित कर लो कि कौन सी सूचना जारी करनी है और कौन नहीं।
- सूचना जारी करने में सुविधा के लिए प्रक्रिया और अथवा फार्म तैयार करो।
- प्रत्येक प्रैस सूचना के लिए उपयुक्त शब्दों के प्रयोग करो।
- यह सुनिश्चित करों कि प्रैस सूचना जारी करने से पूर्व इसे वरिष्ठ अधिकारियों से अनुमोदित करवा कर जारी करने का प्राधिकार मिल गया है। (यदि यह आवश्यक है)
- मीडिया और जांच दल के बीच समन्वय स्थापित करना।

जन संपर्क

जन संपर्क प्रतिनिधि का यह कार्य और दायित्व है कि वह लोगों के साथ संपर्क बना कर रखे।

बम्ब घटना के बारे में प्रारंभिक प्रतिक्रिया

बम्ब की घटना के बारे में प्रारंभिक प्रतिक्रिया के तौर पर जिन कार्यों, प्रक्रिया और प्राथमिकताओं के बारे में विचार किया जाना चाहिए उनकी जानकारी प्रतिभागिओं को इस अनुभाग से प्राप्त होगी।

उद्देश्य

इस अनुभाग को पूरा करने पर आप निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होने चाहिए :

1 बम्ब घटनास्थल का नियंत्रण लेना और तत्काल कार्रवाई के लिए प्राथमिकताएँ निर्धारित करना।

2 अपेक्षित जाँच के लिए उचित रवैया अपनाना ।

बम्ब की घटना पर कार्रवाई करते समय निम्नलिखित तत्त्वों पर विचार किया जाना चाहिए। कार्रवाई केवल इन बिन्दुओं तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए अपितु विशेष परिस्थितियों में अन्य बातों पर भी विचार किया जा सकता है।

- तत्काल सुरक्षा आवश्यकताएं निश्चित करों।
- यह निश्चित करो कि किसे चिकित्सा की आवश्यकता है ।
- क्षेत्र में आने वाली ख़बरों को निर्धारित करें ।
  - दूसरे स्तर के यंत्र, (Secondary division)
  - बचा हुआ विस्फोटक,
  - आतंकवादी हमला ।
- पर्यावरण संबंधी बाधाएँ निश्चित करो।
  - जहरीली गैस
  - जहरीली सामग्री
  - अन्य रसायन(अम्ल)
  - गैस
  - विकीरण(रैडियेशन)

- पानी (वर्षा, वर्फ)
- गर्मी (सूर्य पानी)
- गर्मी (सूर्य)

- आग के लिए जांच
- ढांचागत नुकसान का आकलन करने का प्रयास
  - अप्रत्यक्ष नुकसान
  - भवन के ढांचे की मजबूती
  - गिरा हुआ या गिरने वाला मलवा

- बिजली की स्थिति का अध्ययन करें ।

  भवन में आवेश से पूर्व बिजली काटने पर विचार करें ।

- यह निश्चय करो कि किन सहायक एजैसियों से सम्पर्क करना जरूरी है:
  - अग्निशमन विभाग
  - बाधक सामग्री को हटाने वाली इकाई
  - चिकित्सा सुविधाएं
  - भवन इंजीनियर
  - सेना
  - अन्य (घटनास्थल की आवश्यकता के अनुसार)

घटना स्थल का नियंत्रण

आंतरिक/बाहरी कारक

सभी परिस्थितियाँ, चाहे वे कितनी ही संगठित और नियंत्रित क्यों न हों, आंतरिक और बाह्य कारकों पर निर्भर करती है ।

<u>आंतरिक कारक</u>

- नीति (S.O.P.)

- निधि/धन
- प्रशिक्षण
- उपकरण
- कार्मिक

<u>बाह्य कारक</u>

- सामान्य नागरिक
- मीडिया
- राजनीति
- अन्य कानून लागू करने वाली या सुरक्षा एजेन्सियॉं
- स्थिति

<u>परिधि निर्धारित करें</u>

जब परिधि निश्चित की जा रही है तो निम्नलिखित सामान्य फार्मूला का उपयोग करें। सामान्यतः बिस्फोट केन्द्र से अधिकतम दूरी पर जहां साक्ष्य का टुकड़ा/हिस्सा मिला हो उससे 50 प्रतिशत अधिक दूरी तक बाहरी परिधि होनी चाहिए। आवागमन को सीमित करने के लिए बैरियर बनाओ । (वैरीकेड, क्राइमसीन इत्यादि)

बाहरी परिधि से लगभग 3 मीटर के अन्दर उन लोगों के लिए एक स्थल निश्चित करें, जो अपराध-स्थल खोज-टीम के सदस्य तो नहीं हैं परन्तु कानूनी कारणों से वे वहाँ पर उपस्थिति हैं ।

मूल परिधि लाइन के एकदम बाहर एक अन्य परिधि भी बनाई जा सकती है। जब घटना घनी आबादी वाले क्षेत्र में घटी हो तो सामान्यतः ऐसा करना बड़ा मुश्किल होता है क्योंकि भीड़ को पीछे हटाना कठिन होता है । इन व्यक्तियों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं :-

- पुलिस के उच्च अधिकारी

- अग्निशमन और बचाब कर्मचारी
- सेना के जवान
- विशेष सुरक्षा कर्मचारी
- चिकित्सा कर्मचारी
- राजनेता
- अन्य अति महत्वपूर्ण व्यक्ति
- समाचार मीडिया

विस्फोट के केन्द्र के चारों ओर एक आंतरिक परिधि निर्धारित करें और बैरीकेड, क्राइमसीन टेप इत्यादि का प्रयोग करते हुए आवागमन सीमित करें । आवश्यकतानुसार सुरक्षा कर्मी तैनात करें और अपराध घटनास्थल प्रतिबन्ध लागू करें ।

ऐसे अतिरिक्त परिधि क्षेत्र निश्चित करें जिनका अपराध घटनास्थल से सम्बन्ध हो सकता है ।

<u>कमांड पोस्ट स्थापित करें</u>

जितना शीघ्र संभव हो, घटनास्थल कमांडर को एक कमांड पोस्ट स्थापित करनी चाहिए । इसकी जगह के बारे में सभी संबंघित/सहायक इकाइयों को जानकारी होनी चाहिए । यह इतनी बड़ी हो कि घटनास्थल कमांडर का स्टाफ और संपर्क कर्मचारी यहाँ रह सकें। इसमें निम्नलिखित सामग्री भी होनी चाहिए :

- कमांड पोस्ट को सहायता प्रदान करना
- बिजली संबंधी आवश्यकताएं
- उष्णता
- एअरकन्डीशन
- बिजली
- आराम स्थल

- भोजन और पानी

<u>कार्मिकों को निम्नलिखित सुविधाओं की आवश्यकता होती है</u>:-

- शौचालय, कपड़े धोने, नहाने की जगह
- निजि संपर्क के लिए टैलीफोन
- बैठक कक्ष

<u>कमांड पोस्ट के कार्य</u>

कमांड पोस्ट द्वारा सबसे पहले किए जाने वाले कार्यों में से एक कार्य है, विस्फोट के बाद जांच करने वाले कार्मिकों की आवश्यकताओं को तय करना और शिफ्टों पर बारी-बारी से कार्य करने के लिए कार्यक्रम तैयार करना ।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित गतिविधियाँ को नियंत्रित और समन्वित करने के लिए संसाधनों का आबंटन करना भी घटनास्थल कमांडर का दायित्व है:

- मीडिया
- घटना से संबधित व्यक्ति(दुकानदार, भवन में रहने वाले निवासी इत्यादि)
- घटना के शिकार व्यक्तियों के संबंधी
- दर्शक और राहगीर ।

कार्मिकों और एकत्रित साक्ष्यों के बम्ब घटनास्थल तक लाने-ले जाने के लिए परिवहन की व्यवस्था भी की जानी चाहिए ।

अपराध स्थल प्रक्रिया

बम्ब घटनास्थल की जांच इस तरह से की जानी चाहिए कि मानो विस्फोट से पहले की हर वस्तु अभी

यहाँ पर ही है, यदि ये विस्फोट से ध्वस्त नहीं हो गई है । केवल कुछ वस्तुओं को ढूंढने के बाद ही तालाशी बंद नहीं की जानी चाहिए ।

अक्सर यह सुना जाता है कि विस्फोट से इतना अधिक नुकसान हो गया है कि विस्फोट के कारणों का पता लगना संभव नहीं है । यह बात कभी-कभार ही सच हो सकती है ।

घटनास्थल की सफलतापूर्वक जांच के लिए तालाशी करने वालों का मानसिक रवैया बहुत महत्वपूर्ण होता है । यह निम्नलिखित से प्रभावित होता है :

- व्यक्तिगत रुचि
- भावुकता
- प्रशिक्षण
- अनुभव

प्राथमिक सर्वेक्षण

इस चरण में प्रबन्धन का आधार, संगठन और तार्किकता विकसित की जाती है।घटनास्थल का एक प्रारंभिक दौरा किया जाता है ताकि प्रभारी अधिकारी को घटनास्थल के बारे में एक सामान्य जानकारी हो जाए ।यह दौरा केवल कुछ व्यक्तियों द्वारा ही किया जाना चाहिए लेकिन इसमें बम्ब तकनीशियन अवश्य होने चाहिए ।

प्रारंभिक सर्वेक्षण को अपराध स्थल पर सफल जांच के लिए सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जा सकता है क्योंकि सर्वेक्षण से ही कार्रवाई की सुव्यवस्थित योजना संभव है। इससे घटनास्थल से मौलिक छेड़-छाड़ को रोकने में मदद मिलती है। कुछ सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य इस प्रकार हैं :

- प्रशासनिक और भावनात्मक नियंत्रण स्थापित करना
- तालाशी क्षेत्र की रूपरेखा तैयार करना
- आवश्यक प्रक्रिया और तरीकों का प्रबंध करना

- उपकरणों और कार्मिकों की आवश्यकता निश्चित करना
- अपराध का एक सामान्य विवरण तैयार करना
- प्रारंभिक सर्वेक्षण के दौरान सर्वप्रथम विचाराधीन बात यह है कि ऐसे साक्ष्य कौन-2 से हैं जो नष्ट हो सकते हैं जैसे कि,
  - जूतों के निशान/धूल
  - छापों के साक्ष्य
  - अंगुलियों के निशान
  - अन्य

****

बम्ब घटनास्थल प्रतिक्रिया की प्रक्रिया का अनुलग्नक

प्रारंभिक सर्वेक्षण वर्कशीट

1.तैयारकर्ता

2.शीर्ष/एजेन्सी

3.मामले का पहचानकर्ता

4.अपराध/घटना

5.संदिग्ध अपराधी

6.संदिग्ध का विवरण

7.घटना से प्रभावित

8.प्रभावित का विवरण

9.घटनास्थल का पता/स्थान

10.अनुरोध प्राप्ति की तिथि

11.अनुरोध प्राप्ति का समय

12.अनुरोधकर्ता कर्मचारी

13.फोन संख्या

14.अनुरोध करने वाली एजेन्सी

15.टिप्पणी/विचार

16.प्रति उत्तर

17.आगमन का समय और तिथि

18.आगमन के समय घटनास्थल पर उपस्थित व्यक्ति

19.आगमन के समय घटनास्थल का प्रभारी

20.घटनास्थल का नियंत्रण किससे प्राप्त किया

21.नियंत्रण लेने की तिथि और समय

22.आगमन पर घटनास्थल की स्थिति(सुरक्षित/असुरक्षित)

23.प्रकाश की स्थिति

24.मौसम की स्थिति

25.घटनास्थल का विवरण (सामान्य विवरण)

26.तालाशी में शामिल कार्मिक और उनके कर्त्तव्य

27.साक्ष्यों का मूल्यांकन (टिप्पणियाँ)

28.विशिष्ठ परिस्थितियाँ और स्थितियाँ (टिप्पणी)

29.घटनास्थल सम्मेलन (टिप्पणी)

30.अन्तिम सर्वेक्षण (टिप्पणी)

31.अपराध स्थल जांच पूरी की गई और जानकारी देने के लिए प्राधिकृत

नाम : .....तिथि .....

शीर्ष/पदनाम ..... समय .....

हस्ताक्षर .....

32. जिसे अपराध की जानकारी दी गई :

नाम .....तिथि .....

शीर्ष/पद्नाम.....समय .....

33.अतिरिक्त टिप्पणियाँ

अपराध घटना का प्रलेखन (DOCUMENTATION)

इस अनुभाग में बम्ब विस्फोट जांच की प्रलेखन प्रक्रिया की आपराधिक प्रकृति की चर्चा की गई है। दृश्य के फोटोग्राफ खींचने की तकनीक, रेखा चित्रण और डॉयग्राम बनाने सहित आठ अभिलेखों (लॉग) पर चर्चा की गई है।

उद्देश्यः

इस अनुभाग को पूरा करने पर आप निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगेः

- आठ प्रारंभिक प्रलेखन फार्मों की पहचान करना और उनकी व्याख्या तथा पहचान करना।
- बम्ब घटना का प्रलेखन करने के लिए विभिन्न कदमों को बताना।

अपराध घटना प्रलेखन की श्रेणियॉः

प्रलेखन सामान्यतः एक आसान कार्य नहीं है। बहुत से जांचकर्ता इस पसंद नही करते हैं और यह महसूस करते हैं कि यह समय की बर्बादी है, इससे वास्तविक जांच की प्रगति बाधित होती है तथा इस प्रक्रिया को हल्के-फुलके ढंग से लिया जाना चाहिए अथवा छोड़ देना चाहिए। लेकिन यह जांच, पहचान और अभियोजन प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है। बहुत से कारणों से कई बार घटना का पुर्नसृजन किया जाना आवश्यक होता है। उचित प्रलेखन के बिना अच्छा पुनर्सृजन संभव नहीं होता है। अपराध घटना स्थल प्रलेखन की आठ महत्वपूर्ण श्रेणियॉ हैं जो किसी भी तालाशी में आवश्यक होती हैं।

अलग-अलग एजेंन्सियों में दस्तावेजों के अलग-अलग फार्म हो सकते हैं। फार्मों से कार्मिकों को सहायता मिलती है लेकिन यह सोच-विचार के बदले में नहीं हो सकते हैं।

- प्रशासनिक अभिलेखः इसमें मुख्य घटनाओं, समय और तालाशी की गतिविधियों का प्रलेखन

किया जाता है।

- प्रारंभिक सर्वेक्षणः इसमें प्रारंभिक और निरंतर प्रबंधन तथा संगठित तालाशी को पूरा सुनिश्चित करने के लिए अपनाए गए प्रशासनिक कदमों का प्रलेखन किया जाता है।

- विवरणात्मक वर्णनः इसमें घटना स्थल सामान्य तौर पर कैसा दिखाई देता है, उसका प्रलेखन किया जाता है।

- फोटोग्राफिक अभिलेखः अपराध घटना-स्थल की फोटोग्राफी, समग्र, मध्यम और घटना स्थल के नजदीकी दृश्यों के रिकार्ड तथा फोटोग्राफी कार्यो से संबंधित तकनीकी और विवरणात्मक सूचना का प्रलेखन!

- जब्ती का अभिलेखः इसमें साक्ष्यों की अखण्डता बनाए रखने के लिए इनकी जब्ती का रिकार्ड रखा जाता है।

- अपराध-स्थल डायॅग्राम/रेखाचित्र अभिलेखः इसमें भौतिक साक्ष्यों के स्थानों तथा घटना से संबंधित दूरी, आकार तथा माप इत्यादि का प्रलेखन किया जाता है।

- पाए गए साक्ष्यों का अभिलेखः इसमें प्रशासनिक और नियंत्रण श्रृंखला के उद्देश्य से पहचान संग्रहण, मार्किंग और भौतिक साक्ष्यों की पैकेज़िंग इत्यादि का प्रलेखन किया जाता है।

- अप्रकट निशान अभिलेख **(Latent print lift log)**: यह साक्ष्य अभिलेख की अनुलिपि ही होती है। लेकिन यह एक अलग अभिलेख भी हैं क्योंकि यह प्रयोगशाला में भेजा जाता है तथा वहां पर निशानों का विश्लेषण किया जाता है।

विवरणात्मक वर्णनः घटना स्थल की सामान्य परिस्थितियों को व्यवस्थित ढ़ंग से रिकार्ड करना ही विवरणात्मक वर्णन का उद्देश्य है। इसमें घटना का ''सामान्य से विशिष्ट'' संदर्भ योजना के अनुसार वर्णन होना चाहिए। विवरण एक व्यवस्थित रिकार्ड होता है। कोई भी चीज जो ध्यान आकर्षित करती है, वह रिकार्ड करने योग्य होती हैं। विवरणात्मक वर्णन में निम्नलिखित तरीके शामिल हैं:

1. लिखित अभिलेख
2. एक श्रव्य टेप

विवरणात्मक वर्णन के अनूपूरक के तौर पर फोटोग्राफ का प्रयोग करें।

फोटोग्राफिक वर्णनः अपराध स्थल पर तैयार किया गया फोट्रेग्राफिक रिकार्ड बहुत ही महत्वपूर्ण साक्ष्य होता है। जब जांचकर्ता अपराध स्थल से चले जाते हैं तो इसकी विस्तृत तौर पर समीक्षा की जाती है और प्रायः न्यायालय में साक्ष्य के तौर पर भी प्रस्तुत किए जाते हैं। अतः यह आवश्यक है कि सही ढ़ग से एक फोटोग्रफिक अभिलेख तैयार किया जाए। जितना शीघ्र हो सके फोटोग्राफी शुरु करें। फोटोग्राफी शुरु करने से पहले इसकी योजना बनाएं। इसके अतिरिक्त फोटोग्राफिक प्रयासों का फोटोग्राफिक लॉग के साथ प्रलेखन किया जाए।

यह सुनिश्चित करो कि घटना के समग्र, मध्यम, और नजदीकी दृश्यों का अनुक्रम निश्चित कर लिया गया है। यदि संभव हो तो ऑख के स्तर से फॉटो खींचो ताकि यह पता चल सके कि यदि घटना स्थल को सामान्य नज़र से देखा जाता तो इसका दृश्य कैसा लगता।

आकार निश्चित करने के लिए एक मंजूरशुदा माप यंत्र का प्रयोग करो। जहॉ लागू हो, सर्वप्रथम इस यंत्र के प्रयोग के बिना फोटो खीचों।

साक्ष्य को संग्रहित करने से पूर्व इसका फौटो खींचो। अपराध स्थल के आस-पास के क्षेत्रों, प्रवेश स्थल और बाहर जाने के रास्तों, खिड़कियों इत्यादि के फोटो खींचो। हवाई फोटोग्राफी की संभावनाओं पर भी विचार करो।

ऐसी चीजों के फोटो खींचने से भी मत झिझको जिनका उस समय कोई प्रत्यक्ष महत्व न भी दिखाई दे रहा हो। हो सकता है कि बाद में जांच के दौरान यह महत्वपूर्ण तत्व सिद्ध हों।

अंगुलियों के अप्रकट निशान उठाने से पहले 1:1 फोटो खीचे जाएं अथवा उपयुक्त माप का प्रयोग किया जाए।

घटना होने से पहले के, घटना स्थल के फोटो तथा नक्शे प्राप्त करो।
फोटो द्वि-आयामी होते हैं और डॉयग्राम एवं रेखाचित्र सामान्यतः इनके अनुपूरक ही होते हैं।

अपराध घटना स्थल के डॉयग्राम अथवा रेखाचित्र

डॉयग्राम चीजों, परिस्थितियों और दूरी/आकार तथा संबंध इत्यादि का स्थाई रिकार्ड नियत करते हैं। डॉयग्राम फोटोग्राफ के प्रतिपूरक होते हैं। घटनास्थल पर सामान्यतः कच्चा रेखाचित्र तैयार किया जाता है जोकि बिना माप के होता है।

अस्थाई/कच्चे रेखाचित्र में निम्नलिखित सामग्री शामिल होती हैः

- विशिष्ट स्थिति/स्थान
- तिथि
- समय
- मामले का पहचानकर्ता
- तैयारकर्ता/सहायक
- मौसम की स्थिति

- प्रकाश की स्थिति

- स्केल अथवा डिस्कलेमर स्केल
- कॅम्पस ओरियन्टेशन
- साक्ष्य
- माप/नाप
- संकेत अथवा घटनाक्रम विवरण

कई मामलों में रेखाचित्र पर दी गई पदनाम संख्या का साक्ष्य लॉग में दी गई उसी पदनाम संख्या के साथ समन्वय अथव मिलान किया जा सकता है।

रेखा चित्रों में समुचित माप और विवरण होना चाहिए ताकि यदि आवश्यकता हो तो स्केल के अनुसार डॉयग्राम बनाने के लिए उनका उपयोग किया जा सके।

यह सुनिश्चित करें कि रेखाचित्र बनाना शुरु करने से पहले एक रेखाचित्र तकनीक को चुन लिया जाए। यह भी सुनिश्चित करें कि सभी प्रकार की प्रासंगिक सूचनाएँ और माप को शामिल करने के लिए समुचित स्थान रखा गया है।

रेखाचित्रों का सामान्य अनुक्रमण

- मूल परिधि का नक्शा
- स्थिर वस्तुओं जैसे फर्नीचर इत्यादि का विवरण
- जो-जो साक्ष्य मिलें उनका क्रमानुसार विवरण
- उपयुक्त माप को रिकार्ड करना
- कॅम्पास ओरियन्टेशन इत्यादि के साथ एक संकेत और लेख उपलब्ध कराना

- जैसे जैसे साक्ष्य एकत्रित किए गए हो वैसे वैसे उनका एक लॉग तैयार करना

विभिन्न अभिलेख तैयार करना और अन्य कागजी कार्य बोझिल लग सकता है तथा साक्ष्य एकत्रित करने वालों और तकनीशियनों का कार्य बढ़ा सकता है। लेकिन ऐसा करना जरुरी है क्योंकि अभियोजन प्रक्रिया का यह एक महत्वपूर्ण भाग है।

अनुलग्नक :1

नमूना प्रशासनिक अभिलेख

स्थान/स्थिति कार्मिक

दिनांक

मामले का पहचानकर्ता

तैयारकर्ता/सहायक

समय संगत विवरण/सूचना

- मद

- मद का विवरण

- स्थान/स्थिति
- वसूल/प्राप्त
- फोटोलॉग
- मार्किंगः प्रत्यक्ष-डी
- पैकेजिंग का ढंग/तरीका
- टिप्पणी

अनुलग्नक :2

नमूना फोटोग्राफिक अभिलेख

स्थान/स्थिति

दिनांक

मामले का पहचानकर्ता

कैमरा

फिल्म की किस्म तथा रेटिंग

तैयारकर्ता/सहायक टिप्पणी

- फोटो
- फोटोग्राफ के विषय का विवरण
- कैमरा की सैटिंग तथा लैंस की किस्म
- दूरी
- स्केल का प्रयोग
- रेखाचित्र, यदि लागू हो ।

अनुलग्नक :3

नमूना साक्ष्य रिक्वरी/प्राप्ति अभिलेख

स्थान/स्थिति कार्मिक

दिनांक

मामले का पहचानकर्ता

तैयारकर्ता/सहायक

- मद

- मद का विवरण
- स्थान/स्थिति
- जिसके द्वारा पाया गया
- फोटोलॉग
- मार्किंगः प्रत्यक्ष-डी
  परोक्ष-आई
- पैकेजिंग का ढंग/तरीका
- टिप्पणी

अनुलग्नक :4

नमूना अपराध एस.सी.एफ. डॉयग्राम/रेखाचित्र अभिलेख

स्थान/स्थिति

दिनांक

मामले का पहचानकर्ता

तैयारकर्ता/सहायक

संदर्भ

डिस्कलेमर का स्केल

कॅम्पास ओरियन्टेशन

साक्ष्य

स्थिर वस्तुएँ

माप

संकेत/विवरण

अनुलग्नक :5

नमूना कस्टडी/जब्ती अभिलेख

केस संख्याः

मद --------द्वारा सौपा गया। दिनांक---------समय--------

---------को सौंपा गया। दिनांक---------समय--------

-----को वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

----द्वारा वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

--------द्वारा सौपा गया। दिनांक---------समय--------

---------को सौंपा गया। दिनांक---------समय--------

-----को वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

----द्वारा वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

--------द्वारा सौपा गया। दिनांक---------समय--------

---------को सौंपा गया। दिनांक---------समय--------

-----को वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

----द्वारा वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

--------द्वारा सौपा गया। दिनांक---------समय--------

---------को सौंपा गया। दिनांक---------समय--------

-----को वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

----द्वारा वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

--------द्वारा सौपा गया। दिनांक---------समय--------

---------को सौंपा गया। दिनांक---------समय--------

-----को वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

----द्वारा वापस किया गया। दिनांक---------समय--------

मद

- मद का विवरण
- स्थान/स्थिति
- वसूल/प्राप्त
- फोटोलॉग
- मार्किंगः प्रत्यक्ष-डी
- पैकेजिंग का ढंग/तरीका

- टिप्पणी

अनुवर्ती जांच एवं संदिग्ध व्यक्ति की पहचान

मुख्यालय के संसाधन

ऐसे विभिन्न स्त्रोतों से जानकारी प्राप्त करो जिन्हें इसमें विशेषज्ञता हासिल है। क्योंकि इस तरह की जांच को कुशलता से करने के लिए किसी भी एक एजैन्सी के पास हर तरह की आवश्यक विशेषज्ञता नहीं होती है।

यहॉ तक कि बड़ी एजेंसियों को भी ऐसी जांच के दौरान सामने आने वाले प्रश्नों के उत्तर ढूढने के लिए दूसरी इकाईयों के विशेषज्ञों की सहायता लेनी आवश्यक होती है।

एजेन्सी की बम्ब इकाई तथा अन्य इकाईयों के साथ अच्छा तालमेल बनाकर रखें। ऐसे बहुत से कारण होते हैं जो उचित तालमेल में कई बार बाधक बन जाते हैं। इसमें से कुछ कारण इस प्रकार हैं:

- कार्मिकों का स्थानांतरण
- कमांड स्तर पर आपसी दुश्मनी
- व्यक्तिगत विरोध
- हैसियत
- राजनैतिक कारक
- विभागीय पुनर्गठन और जिम्मेदारियों में बदलाव।

कोई भी अकेला प्रभावी जांच नहीं कर सकता है। कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए किसी भी छोटे ग्रुप के पास आवश्यक सभी प्रकार की विशेषज्ञता होना बहुत मुश्किल है।

विभिन्न एजेन्सियों में जांच समन्वय

समन्वय केवल एक एजेन्सी की इकाईयों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए परन्तु बाहरी एजेन्सियों, सरकारी संस्थाओं और निजी संगठनों के साथ भी होना चाहिए। ऐसी एजेन्सियों और संगठनों का पता

लगाओ जिनके पास न केवल ऐसे संसाधन है जो जांच में सहायक हो सकते हैं बल्कि वे जांच में सहयोग और सहायता करने के भी इच्छुक हों। जब जांच की जा रही हो तो ऐसे संसाधनों का उपयोग करो। उन्हें यह अहसास कराओ कि आवश्यकता होने पर नियमानुसार अनुरोध करने के बाद आप उन्हे भी अपनी सेवाएं और संसाधन उपलब्ध करवाएंगे।

उदाहरण के तौर पर हम गोपनीय स्त्रोतों और सूचना देने वालों की बात करें। कोई भी एजेन्सी जो गोपनीय सूचना एकत्रित करने का कार्य करती है और किसी विशेष अपराध के बारे में या अपराधों की श्रृंखला के बारे में अथवा अपराधियों/आंतकियों के समूह के बारे में सूचना एकत्रित कर रही है तो वह सूचना इकत्रित करने के लिए अपने स्त्रोतों पर निर्भर रहती है। लेकिन जब एक एजेन्सी के दूसरी एजेन्सी के साथ अच्छे सहयोगपूर्ण संबंध हों तो उस एजैन्सी की दूसरी ऐजेन्सी के सूचना स्रोतों तक भी सीधी पहुंच होती है। यह संभव है कि कई बार कुछ ऐसे कानूनी कारण हो सकते हैं जब एक एजेन्सी किसी विशेष स्थान अथवा कार्य में सहायता करने में असमर्थ हो। परंतु सूचना प्राप्त करने के लिए कोई निश्चित साधन न होने की बजाए इसके स्रोतों तक पहुंच होना निश्चय ही कही न कहीं लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

मीडिया

यह एक ज्ञात तथ्य है कि कुछ गवाह पुलिस के सामने तो बात करने में अनिच्छुक हो सकते हैं परन्तु वे मीडिया के किसी सदस्य के साथ पूर्णतः सहयोग कर सकते हैं। मीडिया के उस सदस्य के साथ अच्छे और सहयोग पूर्ण संबंध होने से, उससे ऐसी उपयोगी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। उससे यह भी समझौता किया जा सकता है कि ऐसी जानकारी तत्काल सार्वजनिक न की जाए बल्कि कुछ समय के लिए रोक ली जाए। जांच पूरी होने पर ही ऐसी जानकारी को सार्वजनिक करने का सबसे उपयुक्त समय हो सकता है जब कुछ और तथ्य सामने आ जाएं। जांच पूरी होने पर ऐसी जानकारी को सार्वजनिक करना इतना नाजुक नहीं होगा और इससे जांच के प्रयासों की सफलता में कोई बाधा नहीं आएगी। मीडिया रिपोर्टर को अंत में वह जानकारी दी जा सकती है जिसको वा परिपूर्ण मानते हैं। ऐसी सहयोगपूर्ण व्यवस्था होने से मीडिया और जांचकर्ता, दोनों को ही लाभ होगा।

प्रिन्ट/इलैक्ट्रानिक मीडिया रिपोर्टें

प्रकाशित और इलैक्ट्रानिक मीडिया रिपोर्टो को एकत्रित करके रखें। मीडिया रिपोर्टो में अक्सर ऐसे गवाहों के बयान होते हैं जो घटना स्थल के पास उपस्थित होते हैं परन्तु जांचकर्ता उन्हें नहीं जानते हैं। अपनी जांच को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक सूचना प्राप्त हेतु गवाहों से संपर्क स्थापित करने के लिए इन रिपोर्टो का उपयोग करो।

मीडिया फोटोग्राफ रिपोर्टें

बम्ब फेंकने से संबंधित मीडिया की तस्वीरों में संदिग्ध अपराधी की भी तस्वीर होने की संभावना है। ऐसी तस्वीरों का ध्यान से अध्ययन करो क्योंकि इनसे ऐसे लोगों की घटना के समय उपस्थिती की जानकारी मिल सकती है जिनके बारे में यह समझ लिया गया हो कि वे वहां पर नहीं थे। हो सकता है कि ऐसे व्यक्तियों ने कानून व्यवस्था लागू करने से संबंधित कर्मचारियों के सामने, घटनास्थल पर अपनी उपस्थिति के बारे में इन्कार किया हो।

इस तरह के भ्रम के बारे में पता चलने पर ऐसे लोगों का दोबारा साक्षात्कार लिया जाना आवश्यक हो जाता है क्योंकि यह स्पष्ट ही हो चुका होता है कि पहले उसने झूठ कहा था और किसी महत्वपूर्ण सूचना को छुपा रहा था। इस बात को भी समझो कि जो फोटोग्राफ प्रकाशित हुए हैं वे वास्तव में मीडिया द्वारा लिए गए फोटोग्राफ की बहुत कम संख्या हैं। मीडिया से अच्छे संबंध होने पर इन उपलब्ध अतिरिक्त फोटोग्राफ से बम्ब जांचकर्ता को काफी मदद मिल सकती है।

मीडिया फुटेज

कानून व्यवस्था से संबंधित कर्मचारियो से भी पहले मीडिया घटना स्थल पर पहुंच सकता है। इलैक्ट्रानिक मीडिया के पास, बम्ब विस्फोट की घटना के तत्काल बाद, घटना स्थल और आसपास के क्षेत्र के बढ़िया फुटेज हो सकते हैं। घटना के तुरंत बाद घटना स्थल पर या इसके आसपास दोबारा वैसी ही स्थिति पैदा करने का प्रयास किया जा रहा हो तो ये फुटेज काफी सहायक हो सकते हैं। आप घटना के तुरंत बाद घठना के दृश्य को लिपिबद्ध करने के लिए इस फुटेज का उपयोग करें।

बम्ब फटने से पूर्व की घटना स्थल के दृश्य की जानकारी मीडिया लाइब्रेरी से प्राप्त हो सकती है। यदि घटना से पहले किसी तरह की गतिविधि या घटना की मीडिया ने कोई कवरेज की है तो वह भी मीडिया

लाइब्रेरी सें मिल सकती हैं। घटना के लिपिबद्ध होने और बम्ब फटने से पूर्व की स्थिति को पुनर्स्थापित करने के लिए इस फुटेज का उपयोग करो।

लिखित अथवा प्रकाशित मीडिया जानकारी

प्रकाशित सामग्री की मात्रा और इकत्रित सामग्री की मात्रा में काफी अंतर होता है। जब कोई रिपोर्ट लिखी जाती है तो वह संपादित होने के बाद ही प्रकाशित होती है। संपादन से पूर्व रिपोर्टर ने जो रिपोर्ट तैयार करके दी हो हो उसमें ऐसी सामग्री हो सकती है जो प्रकाशन के लिए इतनी महत्वपूर्ण न हो परन्तु जांचकर्ता के लिए बहुत महत्व की है।

ऐसे तथ्यों अथवा जानकारी को ढूंढने का प्रयास करो जो जांच के लिए महत्वपूर्ण हो।

सामान्य नागरिक

बम्ब घटनास्थल पर ऐसे कई तरह के व्यक्ति हो सकते हैं जो संभावित गवाह बन सकते हैं। इनमें से कुछ संभावित गवाह इस प्रकार के व्यक्ति हो सकते हैं:

- दुर्घटना के शिकार व्यक्ति
- गवाह/प्रत्यक्षदर्शी
- बम्ब तकनीशियन
- अन्य जांचकर्ता
- अन्य एजेन्सियों के प्रतिनिधि
- पर्यवेक्षक

अनुवर्ती जांच के उद्देश्य

अपराध परिभाषित होना चाहिए और इसकी जांच होनी चाहिए। अपराधी को बन्दी बनाया जाना चाहिए और उसे न्यायालय में पेश किया जाना चाहिए। बन्दी बनाने से पूर्व सभी औपचारिकताएं पूरी की जाएं। बन्दी बनाने से पूर्व उसके अपराध को सिद्ध करने के लिए आवश्यक कारक हैं उद्देश्य, अवसर और साधन।

उद्देश्य: न्यायालय में साक्ष्य देने के लिए इस बात को प्रमाणित करने की आवश्यकता होती है कि आरोपित व्यक्ति का बम्ब फैंकने के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य था। किसी घटना के पीछे निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं:

- आतंकवाद
- लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना
- बदले की भावना
- प्रेम संबंध
- सिविल युद्ध
- आत्म संतोष
- आर्थिक लाभ
- अपनी पहचान बनाना
- धोखाधड़ी
- दुर्भावना से/गुंडागर्दी
- घृणा

जब किसी संदिग्ध घटनाक्रम के बारे में ''साधन उद्देश्य और अवसर'' की चर्चा की जा रही हो तो उद्देश्य सबसे महत्वपूर्ण विचारणीय विषय है।

अवसर

एक बार जब घटना का उद्देश्य निश्चित हो जाए तो जांचकर्ता यह साबित करने में सक्षम होना चाहिए कि संदिग्ध व्यक्ति के पास अपराध करने के पर्याप्त अवसर थे।

साधन

जांच में यह तथ्य भी शामिल होना चाहिए कि संदिग्ध व्यक्ति के पास अपराध करने के लिए पर्याप्त साधन थे।

आधारभूत छह प्रश्न

जांच प्रश्नों से आरंभ की जानी चाहिए। निम्नलिखित प्रश्न जांच के लिए मूलभूत प्रश्न माने जाते हैं–

<u>क्या</u>

– बम्ब बनाने के लिए किस सामग्री का उपयोग किया गया?

– बम्ब फेंकने वाले को यंत्र बनाने के लिए किस विशेषज्ञता की आवश्यकता थी?

– बम्ब का लक्ष्य क्या था?

<u>क्यों</u>

– बम्ब का प्रयोग क्यों किया गया?

– जहां बम्ब था उस स्थान पर ही बम्ब क्यों रखा गया?

– जैसा बम्ब था वैसा ही क्यों बनाया गया ?

<u>कहाँ</u>

– बम्ब कहाँ बनाया गया?

– बम्ब कहां रखा गया?

– बम्ब निर्माण में प्रयुक्त सामग्री कहाँ से ली गई?

<u>कौन</u>

– बम्ब का शिकार कौन था?

– बम्ब का लक्ष्य कौन था?

– बम्ब बनाने वाला कौन था?

– बम्ब रखने वाला कौन था?

<u>कब</u>

– बम्ब कब पहुंचाया गया?

– बम्ब कब बनाया गया?

– बम्ब कब फोड़ा गया?

<u>कैसे</u>

– बम्ब कैसे पहुंचाया गया?

– बम्ब कैसे बनाया गया?

– बम्ब कैसे फोड़ा गया?

जांच का क्षेत्र

जांच के इस स्तर पर कई तरह की सूचनाएँ शामिल होती हैं।

लक्ष्य की प्रकृति **(Nature of Target)** की जांच करो

लक्ष्य का विश्लेषण करने पर, अपराधी के उद्देश्य के बारे में जानकारी प्राप्त हो सकती है अथवा यह पता चल सकता है कि लक्ष्य और अपराधी के उद्देश्य में आपसी क्या संबंध है। उदाहरण के तौर पर कर्मचारियों की हड़ताल के दौरान एक गैर यूनियन कर्मचारी के घर पर बम्ब फेंकना। इससे यह पता चलता है कि अपराधी यूनियन का सदस्य हो सकता है लेकिन ऐसा भी हो सकता है यूनियन से उसका संबंध न भी हो। यह भी हो सकता है कि बम्ब वैसे ही फेंका गया हो ताकि इसके शिकार व्यक्ति से पैसे ऐंठें जा सकें।

दुर्घटना के शिकार व्यक्ति की जांच

संभावित शिकार व्यक्ति की पहचान करना एक कठिन काम है। बम्ब का शिकार व्यक्ति किनारे खड़ा कोई ऐसा निर्दोष व्यक्ति भी हो सकता है जिसका बम्ब फेंकने वाले से कोई संबंध न हो। अतः यह आवश्यक है कि शिकार हुए व्यक्ति की पृष्ठभूमि की भी जांच की जाए। इस जांच में निम्नलिखित बातें शामिल हो सकती हैं

- व्यापारिक संबंध (प्रतिर्स्पधा)
- गैर कानूनी गतिविधियां (नशीली दवाएं)
- राजनैतिक गतिविधियां (आतंकवाद)
- ध्यान आकर्षित करना (समाचार पत्रों में स्थान न बना पाना)
- प्रेम संबंधी समस्याएं (प्रेम त्रिकोण)

बिस्फोट की जांच

यदि इस विस्फोट से चोटें इत्यादि आई हों तो यह निश्चय करने की कोशिश करो कि :

- क्या यह हत्या या हत्या का प्रयास था?
- क्या चोटें परिस्थितिवस आई हैं?

यदि इस विस्फोट से कोई चोट न आई हों तो यह निश्चय करने का प्रयास करो किः

- क्या इसका लक्ष्य कोई संपति थी?
- क्या इसका लक्ष्य कोई व्यक्ति था?

- क्या यह विस्फोट दुर्घटना के कारण था।
- क्या यह विस्फोट औद्योगिक था।

यंत्र **(device)** की जांच

- क्या यंत्र सक्रिय था या निष्क्रिय ?
- क्या यह निशाने पर नहीं लगा?
- क्या यह सुरक्षित घोषित किया गया था?
- क्या यह केवल इशारे के लिए था?

सूचना के स्रोत

घटना के बारे में उपलब्ध समस्त जानकारियॉ एकत्रित की जाएं, उनका विश्लेषण किया जाए और आपस में मिलान किया जाए। इनमें कुछ ऐसे संसाधन हो सकते हैं जो तत्काल उपलब्ध हों। इनमें से कुछ इस प्रकार हो सकते हैः

- प्राथमिक रिपोर्ट, जिसमें तत्व निम्नलिखित हो सकते हैंः
  - क्या घटना हुई।
  - घटना स्थल का विवेचन
  - प्रत्यक्षदर्शी
  - साक्ष्य
  - साक्ष्यों का मूल्यांकन
  - जांचकर्ताओं की टिप्पणी
  - संबंधित घटना
- पुलिस रिपोर्ट
- तकनीशियन की रिपोर्ट
- न्यायालिक प्रयोगशाला की रिपोर्ट
- अन्य सहयोगी एजेन्सियों की रिपोर्टे जैसे कि अग्निशमन विभाग इत्यादि
- फोटोग्राफ, डॉयग्राम और रेखाचित्र
- औपचारिक स्टेटमैंट

- प्रैस विज्ञप्ति और समाचार पत्रों के लेख
- आसूचना रिपोर्ट

आसूचना रिपोर्ट एक अलग फाइल में रखी जाए ताकि न्यायालय में उसे पेश करने से बचा जा सके। यह रिपोर्ट न्यायालिक विज्ञान प्रयोगशाला के लिए लाभप्रद हो सकती है। लोगों से साक्षात्कार और पूछताछ, संदिग्ध की पहचान के लिए प्रमाण उपलब्ध करा सकते हैं। कुछ मामलों में संदिग्ध व्यक्ति इससे अपराध को भी स्वीकार कर सकते हैं।

लाइन–अप (कतार में खड़े करना)

संभावित संदिग्ध अपराधियों की पहचान के लिए उन्हें कतार में खड़े करने से ठोस प्रमाण मिल सकते हैं यदि प्रत्यक्षदर्शी लोगों के समूह में से कोई अपराधी को पहचान लेता है।

उद्देश्य और अवसर के बारे में प्रमाण जुटाने के लिए तो जांच की मूलभूत तकनीकों का प्रयोग किया जाता है लेकिन बम्ब फेंकने के अपराध की प्रकृति के बारे में कुछ अनोखी समस्याएं आ सकती हैं। अतः यह जरूरी है कि किसी परिणाम पर पहुंचने से पहले सावधानी से विचार किया जाए। कई बार स्पष्ट दिखाई देने वाले परिणाम भी गलत साबित हो सकते हैं।

*****